हरिभूमि
# भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 25 अक्टूबर 2026

11 हरियाणवी ऑर्केस्ट्रा में टीम कोड आर अव्वल



12 ओलावृष्टि से धान की फसल को हुआ नुकसान...






## खबर संक्षेप

### राज्य नेटबॉल चैंपियनशिप के लिए चयन ट्रायल आज

**भिवानी।** हरियाणा नेटबॉल एसोसिएशन से संबंधित नेटबॉल एसो.ऑफ डिस्ट्रिक्ट भिवानी की ओर से स्टेट चैंपियनशिप 2026-27 के लिए जिला स्तरीय ट्रायल्स का आयोजन 25 अक्टूबर को किया जाएगा। जिला अध्यक्ष पवन शर्मा ने बताया कि ट्रायल्स का आयोजन गांव कलिंगा स्थित श्रीबालाजी स्कूल में होगा। ट्रायल्स का समय शाम 4 बजे निर्धारित किया है। एसो. ने स्पष्ट किया कि भिवानी जिले से भाग लेने वाले सभी इच्छुक खिलाड़ी को अपना आधार कार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो, निवास प्रमाण पत्र साथ लाना अनिवार्य रहेगा।

### सांवड़ में भूमि पूजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम आज

**चरखी दादरी।** सांवड़ में सौंफ-कासनी रोड स्थित नव निर्माणाधीन विद्यालय परिसर में 25 अक्टूबर को सुबह सवा नौ बजे भूमि पूजन कार्यक्रम होगा। चुन्नीलाल आर्य गीता विद्या मंदिर प्रबंधन समिति सांवड़ की ओर से आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद धर्मबीर सिंह करेंगे। हरियाणा विस. के उपसभापति डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा मुख्य अतिथि होंगे। कार्यक्रम में लोक गायक राजेश थुरानिया एंड पार्टी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देंगे। दादरी विधायक सुनील सांगवान, मुख्यमंत्री के ओएसडी भोपाल सिंह खदरी, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष शंकर लाल धूपड़ और सीबीएलयू भिवानी की कुलपति दीप्ति धर्माणी विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होंगे।

### क्षेत्रवासियों ने जिला प्रशासन व विभाग के खिलाफ की जोरदार नारेबाजी

# सीवरेज ओवरफ्लो होने से सड़क पर डेढ़ फुट तक गंदा पानी जमा

**वार्ड 12 के लक्ष्मीनगर की इस सड़क से सैकड़ों लोगों का आवागमन**

*बदबूदार पानी से बच्चे, महिलाएं व बुजुर्ग परेशान, डीसी कैंप कार्यालय व अधिकारियों को दी सूचना*

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी





भिवानी। सीवरेज ओवरफ्लो एवं सड़क पर गंदा पानी जमा होने पर विरोध जताते लक्ष्मी नगर क्षेत्रवासी और सड़क पर जमा गंदा पानी। फोटो : हरिभूमि

दादरी रोड, ढाना रोड वार्ड-12 के लक्ष्मीनगर में शंकरनाथ मंदिर के सामने से मिनी बाईपास तक सीवरेज ओवरफ्लो होने से सड़क पर करीब डेढ़ फुट तक गंदा पानी जमा हो गया। शुक्रवार शाम करीब छह बजे उत्पन्न हुई समस्या से क्षेत्रवासियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

वहीं कॉलोनी की गलियों में भी सीवरेज ब्लॉक होने के कारण स्थिति और गंभीर बनी हुई है। बदबूदार पानी से परेशान क्षेत्रवासियों ने एकत्रित होकर जोरदार नारेबाजी की और प्रशासन से जल्द समाधान करवाने की मांग उठाई। क्षेत्रवासियों ने बताया कि सुबह के समय बच्चे सैर करने के लिए निकलते हैं, जबकि महिलाएं मंदिरों में पूजा-अर्चना करने जाती हैं। सड़क मार्ग से प्रतिदिन सैंकड़ों लोगों का आवागमन होता है, लेकिन सड़क पर जमा गंदे पानी और दुर्गंध के कारण लोगों को आने-जाने में भारी परेशानी हो रही है। बच्चों, महिलाओं व बुजुर्गों को विशेष रूप से दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों को आशंका है कि लंबे समय तक गंदा पानी जमा रहने से बीमारियों का खतरा भी बढ़ सकता है। बलबीर जांगड़ा ने कहा कि सड़क पर डेढ़ फुट तक गंदा पानी जमा होना गंभीर समस्या है। सुबह बच्चों के सैर करने और महिलाओं के मंदिर जाने के समय भी लोगों को इसी गंदे पानी से होकर गुजरना पड़ता है। संबंधित विभाग को तुरंत पानी की निकासी करवाकर लोगों को राहत देनी चाहिए। एडवोकेट योगेंद्र सोनी ने कहा कि वार्ड 12 में सीवरेज व्यवस्था को दुरुस्त करना जरूरी है। सीवरेज ओवरफ्लो और गलियों में ब्लॉकेज के कारण स्थानीय निवासियों का दैनिक जीवन प्रभावित हो रहा है। प्रशासन को मौके का निरीक्षण करवाकर समस्या का स्थायी समाधान करना चाहिए, ताकि लोगों को बार-बार इस परेशानी का सामना न करना पड़े। राजेंद्र ग्रेवाल ने कहा कि बदबूदार सीवरेज का पानी सड़क पर जमा रहने से लोगों में रोष है। प्रतिदिन सैंकड़ों लोगों के आवागमन वाले इस मार्ग पर जलभराव होने से परेशानी बढ़ गई है। अधिकारियों को जनसमस्या को गंभीरता से लेते हुए सीवरेज की सफाई और गंदे पानी की निकासी का तुरंत प्रबंध करना चाहिए। प्रदर्शन में सरोज देवी, संतोष जांगड़ा, चंद्रकला यादव, रोशनी प्रजापत, गुड्डी, निर्मला शर्मा, मुन्नी, रोशनी, राजेंद्र ग्रेवाल, रामसिंह यादव, जयभगवान शर्मा, संजय व कालू आदि मौजूद रहे।

#### जल्द करवाया जाए समाधान

सामाजिक कार्यकर्ता सुरेश सैनी ने कहा कि आमजन की मूलभूत समस्याओं का समाधान करना प्रशासन की प्राथमिकता होनी चाहिए। सड़क व गलियों में सीवरेज का गंदा पानी जमा होने से लोगों को परेशानी हो रही है। उन्होंने संबंधित विभाग के अधिकारियों से मांग की कि स्थिति का जायजा लेकर जल्द से जल्द समस्या का स्थायी समाधान करवाया जाए। उन्होंने मांग की की अधिकारियों को चाहिए कि वे मौके पर आकर प्रत्येक वार्ड में समस्याएं सुने और समस्या का समाधान करें। समस्या को लेकर डीसी कैंप कार्यालय में संबंधित अधिकारियों को सूचित किया गया। क्षेत्रवासियों ने चेतावनी दी कि समस्या का शीघ्र समाधान नहीं किया तो वे कड़ा रूख अपनाने को मजबूर होंगे।

# 95% क्षेत्र में बिजली सप्लाई बहाल फॉल्ट दूर करने में जुटे कर्मचारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी



चरखी दादरी। कंट्रोल रूम में फोन पर शिकायत सुनता कर्मचारी।

बिजली कर्मचारियों की करीब 45 घंटे की हड़ताल समाप्त होने के बाद जिले में बिजली आपूर्ति व्यवस्था को पटरी पर लाने का काम तेज हो गया है। कर्मचारी फीडरों और सब स्टेशनों को चालू करने के साथ बिजली लाइनों में आए फॉल्ट दूर करने में जुटे हैं। शुक्रवार रात से शुरू हुए मरम्मत कार्य के चलते शनिवार दोपहर तक जिले के करीब 95 प्रतिशत हिस्से में बिजली आपूर्ति बहाल कर दी गई। शेष क्षेत्रों में भी कर्मचारियों ने तकनीकी खामियां दूर कर सप्लाई सुचारु करने के प्रयास जारी रखे। हड़ताल के कारण जिले में घरेलू उपभोक्ताओं से लेकर व्यापारिक प्रतिष्ठानों तक बिजली संकट का सामना करना पड़ा। लंबे कट और कम वोल्टेज के चलते पेयजल आपूर्ति भी प्रभावित हुई।

बिजली के अभाव में जलघरों के पंप नहीं चलने से लोगों को पानी की समस्या झेलनी पड़ी। कर्मचारियों के काम पर लौटने के बाद निगम ने प्राथमिकता के आधार पर प्रभावित क्षेत्रों में आपूर्ति शुरू करवाने का अभियान चलाया। जिले में दादरी एपी और डीएस के अंतर्गत कुल 286 फीडर हैं। इसके अलावा दादरी और बाढड़ा क्षेत्र में 28 सब स्टेशन संचालित हैं। हड़ताल के दौरान बिजली व्यवस्था प्रभावित होने से इन फीडरों, सब स्टेशनों और हाईटेंशन लाइनों को दोबारा चालू करना चुनौतीपूर्ण रहा। कर्मचारियों ने बिजली ढांचे का निरीक्षण कर खराब जंपर, क्षतिग्रस्त केबल और अन्य तकनीकी खामियों को ठीक किया। मरम्मत पूरी होने के साथ अलग-अलग क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति बहाल होती गई। दो दिन की हड़ताल के दौरान बिजली संबंधी शिकायतों का दबाव भी बढ़ा। इस अवधि में कंट्रोल रूम में 285 ऑफलाइन और ऑनलाइन माध्यम से 980 शिकायतें दर्ज की गईं। हड़ताल समाप्त होने के बाद भी शिकायतें मिलती रहीं। शुक्रवार रात 10 बजे के बाद शनिवार दोपहर तक कंट्रोल रूम में 90 और ऑनलाइन 550 शिकायतें प्राप्त हुईं। इनमें हाईटेंशन और लो टेंशन लाइनों के जंपर खराब होने, न्यूट्रल व अर्थिंग में दिक्कत और केबल क्षतिग्रस्त होने जैसी समस्याएं शामिल थीं। बिजली निगम के अधिकारियों के अनुसार शनिवार दोपहर तक अधिकतर शिकायतों का निपटारा कर दिया गया था।

#### बिजली आपूर्ति बहाली के कार्य में तेजी

अनुबंधित कर्मचारी यूनियन के जिला प्रधान रवि शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री और ऊर्जा मंत्री के साथ हुई बैठक में गुरुग्राम और नूंह में बिजली वितरण व्यवस्था निजी हाथों में सौंपने के फैसले पर चर्चा हुई। इसके बाद कर्मचारियों ने हड़ताल समाप्त कर काम पर लौटने का निर्णय लिया। कर्मचारियों की वापसी से फॉल्ट दूर करने और बिजली आपूर्ति बहाल करने के कार्य में तेजी आई है।

# चोरी करने के मामले में आरोपी को किया गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानी खेड़ा

पुलिस ने घर में घुसकर चोरी करने के मामले में आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। बवानी खेड़ा निवासी एक महिला ने पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई थी कि उसके परिवार के सभी सदस्य अपने रिश्तेदारों के यहां गए हुए थे। इसी दौरान पीछे से चोर घर का ताला तोड़कर घर से सामान चोरी करके ले गया।

शिकायत के आधार पर थाना बवानीखेड़ा में संबंधित धाराओं के तहत अभियोग दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने मुख्य सिपाही राकेश के नेतृत्व में चोरी की वारदात में संलिप्त आरोपी को न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट प्राप्त कर गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपी की पहचान सुनील पुत्र राम अवतार, निवासी वार्ड नंबर-5, बवानीखेड़ा के रूप में हुई है। पुलिस ने



अदालत ने आरोपी को जिला कारागार में भेजा

आरोपी को न्यायालय में पेश कर एक दिन का पुलिस रिमांड हासिल किया। रिमांड अवधि के दौरान आरोपी से 1,000 रुपये बरामद किए गए। रिमांड अवधि पूरी होने के बाद आरोपी को पुन न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे जिला कारागार भेजने के आदेश दिए गए।

# जांगड़ा समाज की मेधावी प्रतिभाएं 15 नवंबर को होंगी सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

■ 10वीं और 12वीं कक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा

विश्वकर्मा समाज जनकल्याण सेवा समिति गांव बलकरा की ओर से जांगड़ा समाज के मेधावी विद्यार्थियों और प्रतिभावान खिलाड़ियों के सम्मान में 15 नवंबर को समारोह आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम उत्सव गार्डन दादरी में होगा। समिति के प्रधान बलबीर सिंह जांगड़ा और सचिव रामफल जांगड़ा ने बताया कि समारोह में दसवीं और बारहवीं कक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। इसके साथ ही राज्य और राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को भी सम्मान मिलेगा। उन्होंने बताया कि समारोह का उद्देश्य समाज की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना और युवाओं को शिक्षा व खेलों में बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करना है। मेहनत, अनुशासन और लगन से सफलता प्राप्त की जा सकती है। प्रतिभाओं को सम्मान मिलने से अन्य विद्यार्थियों और युवाओं को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। पात्र विद्यार्थियों और खिलाड़ियों को अपने आवेदन फॉर्म 7 नवंबर तक जमा करवाने होंगे। समिति ने आवेदन प्राप्त करने और जमा करवाने के लिए क्षेत्रवार प्रतिनिधियों को जिम्मेदारी सौंपी है। इनमें दादरी से नफे सिंह जांगड़ा रावलधिया, बाढ़ड़ा से अशोक जांगड़ा, मनोज जांगड़ा व भूप सिंह जांगड़ा, बौंद से सुरेश मास्टर रानीला, ग्रामीण क्षेत्र से रणधीर जांगड़ा लोहरवाड़ा, झोझू ब्लॉक से महाबीर सिंह नंबरदार व मनसुख ब्लॉक प्रधान तथा दादरी शहर से संजय जांगड़ा चांगरोडिया शामिल हैं।

# सबसे पहले 58-तोशाम विस क्षेत्र ने पूरा किया लंबित नोटिसों का कार्य

■ एसडीएम संदीप कुमार ने पूरी टीम को दी बधाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| तोशाम



तोशाम। एसडीएम को कागजात सौंपते टीम सदस्य। फोटो : हरिभूमि

डीसी कम जिला निर्वाचन अधिकारी साहिल गुप्ता के कुशल मार्ग दर्शन में भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार चल रहे एसआईआर/ विशेष गहन पुनरीक्षण कार्य के अंतर्गत 58-तोशाम विधानसभा क्षेत्र में एसडीएम कम पंजीयन अधिकारी संदीप कुमार के देखरेख में लंबित नोटिसों के निपटान का कार्य शुक्रवार शाम को पूरा कर लिया गया है।

इस कार्य के सफल क्रियान्वयन में एमपीएचडब्लू मोहित, सचिन एवं ईश्वर सहित पूरी टीम के सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। टीम के सफल प्रयासों से यह लक्ष्य निर्धारित समय में हासिल किया जा सका। जिला में तोशाम विस. क्षेत्र द्वारा हासिल की गई यह उपलब्धि निर्वाचन कार्यों के प्रति प्रतिबद्धता, बेहतर प्रबंधन और टीम भावना का उत्कृष्ट उदाहरण है। निर्वाचन कार्यालय से मिली जानकारी अनुसार तोशाम विस क्षेत्र में कुल 35,797 नोटिसों से संबंधित कार्य को किया जाना था। इस कार्य को समयबद्ध तरीके से पूरा करते हुए तोशाम विधानसभा क्षेत्र ने भिवानी जिले में सबसे पहले लंबित नोटिसों के कार्य को पूर्ण करने का गौरव हासिल किया है।

यह उपलब्धि एसडीएम के कुशल नेतृत्व, निरंतर मार्गदर्शन एवं प्रभावी निगरानी और निरंतर समीक्षा का परिणाम है। इस कार्य को पूरा होने पर एसडीएम संदीप कुमार ने पूरी टीम को बधाई देते हुए कहा कि यह सफलता सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सामूहिक प्रयास, जिम्मेदारी और कर्तव्यनिष्ठा का परिणाम है।

### गेट पास एवं भुगतान में देरी नहीं करने के दिए निर्देश

# कृषिमंत्री ने बाजरा खरीद व्यवस्था का लिया जायजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी



भिवानी। मंडी में फसल खरीद प्रक्रिया का जायजा लेते कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा।

प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्याम सिंह राणा ने शुक्रवार देर शाम उपायुक्त मनदीप कौर और संबंधित विभागों के अधिकारियों की मौजूदगी में दादरी अनाज मंडी का दौरा कर बाजरा खरीद व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने खरीद प्रक्रिया का निरीक्षण करने के साथ किसानों और आढ़तियों से बातचीत कर उनकी समस्याओं की जानकारी ली। कृषि मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मंडी में किसानों को फसल बेचने में किसी प्रकार की परेशानी नहीं होनी चाहिए। गेट पास जारी करने, फसल उठान और भुगतान की प्रक्रिया निर्धारित समय में पूरी की जाए।

कृषि मंत्री ने कहा कि केंद्र और प्रदेश सरकार किसानों की उपज का उचित मूल्य सुनिश्चित करने और उनके हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। मंडियों में खरीद, भंडारण और भुगतान से संबंधित व्यवस्थाएं सुचारू रखी जाएं। उन्होंने अधिकारियों को खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता बनाए रखने और किसानों की शिकायतों का प्राथमिकता से समाधान करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि खरीदे गए बाजरे का उठान समय पर होना चाहिए, ताकि मंडी में फसल का अनावश्यक जमाव न हो और किसानों को आवागमन में परेशानी का सामना न करना पड़े। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष राष्ट्रदीप परमार, एसडीएम डॉ. वीरेंद्र सिंह, मार्केट कमेटी के वाइस चेयरमैन मोहन मकड़ानिया, डीएमईओ ज्योति धनखड़, उपनिदेशक पशुपालन विभाग डॉ. जसवंत सिंह आदि मौजूद रहे।

#### इंतजार न करना पड़े

कृषि मंत्री ने कहा कि किसानों को गेट पास बनवाने में अनावश्यक परेशानी नहीं होनी चाहिए। मेरी फसल-मेरा ब्यौरा पोर्टल पर दर्ज विवरण में किसी प्रकार का मिसमैच मिलने पर संबंधित अधिकारी जांच कर नियमानुसार जल्द समाधान करें। इससे किसानों को फसल बेचने के लिए मंडियों में लंबे समय तक इंतजार नहीं करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मंडी में आने वाले प्रत्येक किसान की समस्या को गंभीरता से सुना जाए।

# फसल खरीद में किसानों को नहीं आने दी जाएगी कोई भी परेशानी : परमार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी



■ किसानों के खातों में लगभग 3447 करोड़ रुपये ट्रांसफर किए

भाजपा दादरी जिला अध्यक्ष राष्ट्रदीप परमार ने कहा कि हरियाणा सरकार किसानों की फसल का एक-एक दाना न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदने के लिए प्रतिबद्ध है। खरीफ खरीद सीजन 2026-27 के तहत प्रदेश की मंडियों और खरीद केंद्रों में धान की खरीद जारी है। सरकार ने खरीद प्रक्रिया को सुचारू बनाने के लिए व्यापक प्रबंध किए हैं।

राष्ट्रदीप परमार ने बताया कि 21 अक्टूबर तक प्रदेश की मंडियों और खरीद केंद्रों में लगभग 30.26 लाख मीट्रिक टन धान की आवक हुई है, जिसमें से करीब 24.93 लाख मीट्रिक टन धान की खरीद की जा चुकी है, जबकि 17.54 लाख मीट्रिक टन धान का उठान भी हो चुका है। उन्होंने कहा कि किसानों को समय पर भुगतान सुनिश्चित करने के लिए सरकार प्रयासरत है। अब तक एमएसपी के अनुसार किसानों के बैंक खातों में लगभग 3447 करोड़ रुपये हस्तांतरित किए जा चुके हैं।

भाजपा जिलाध्यक्ष के अनुसार मंडियों में किसानों की सुविधा के लिए प्रशासनिक अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है। जिला उपायुक्तों को वरिष्ठ अधिकारियों को नोडल अधिकारी नियुक्त करने के निर्देश दिए हैं। खरीद व्यवस्था की नियमित निगरानी के साथ जरूरत के अनुसार अतिरिक्त खरीद केंद्र भी खोले जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि मेरी फसल-मेरा ब्यौरा पोर्टल पर पंजीकृत ऐसे किसानों, जिनकी फसल का सत्यापन नहीं हो पाया है, उनके सत्यापन की प्रक्रिया जल्द पूरी करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए गए हैं। राष्ट्रदीप परमार ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने और खरीद प्रक्रिया को पारदर्शी एवं व्यवस्थित बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

## फिजिकल गोल्ड, ईटीएफ और म्यूचुअल फंड के फायदे और सीमाएं

# सोने में निवेश का सही रास्ता चुनें चमक ही नहीं लागत को भी देखें

**खरीद-बिक्री का खर्च, सुरक्षा, निवेश की सुविधा और लागत तय करेंगे वास्तविक मुनाफा**

**बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोले, केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं, क्षमता को जानें**

बिजनेस डेस्क

सोना भारतीय परिवारों के लिए केवल आभूषण या परंपरा का प्रतीक नहीं, बल्कि मुश्किल वक्त का भरोसेमंद सहारा भी रहा है। महंगाई, आर्थिक अनिश्चितता और शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच निवेशक अपने पोर्टफोलियो में सोने को जगह देना पसंद करते हैं। हालांकि, अब सोने में निवेश का मतलब केवल गहने या सिक्के खरीदकर तिजोरी में रखना नहीं रह गया है। बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोल दिए हैं। कोई फिजिकल गोल्ड खरीदता है, तो कोई गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) या गोल्ड म्यूचुअल फंड के जरिए निवेश करता है। तीनों विकल्पों का उद्देश्य सोने की कीमत में होने वाली बढ़ोतरी से लाभ उठाना हो सकता है, लेकिन इनकी लागत, खरीदने-बेचने की प्रक्रिया, सुरक्षा और निवेश की सुविधा अलग-अलग है। इसलिए केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं है। यह समझना भी जरूरी है कि कौन-सा विकल्प आपकी जरूरत, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के अनुकूल है।



### फिजिकल गोल्ड

फिजिकल गोल्ड में निवेश का सबसे पारंपरिक तरीका सोने के सिक्के, छड़ या आभूषण खरीदना है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक के पास सोना वास्तविक रूप में मौजूद रहता है। जरूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल उपहार देने, पारिवारिक आयोजनों या अन्य व्यक्तिगत जरूरतों के लिए भी किया जा सकता है। हालांकि, निवेश के नजरिये से आभूषण और सोने के सिक्के एक जैसे नहीं हैं। गहने खरीदते समय मेकिंग चार्ज और लागू वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का खर्च जुड़ता है। दोबारा बेचने पर मेकिंग चार्ज सामान्यतः वापस नहीं मिलता। शुद्धता की जांच, दुकानदार की खरीद नीति और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर के कारण भी वास्तविक मुनाफा घट सकता है। सिक्कों और छड़ों में आमतौर पर आभूषणों की तुलना में मेकिंग चार्ज कम होता है, फिर भी खरीद मूल्य और बिक्री मूल्य का अंतर ध्यान में रखना चाहिए। इसके अलावा, घर में सोना रखने पर चोरी या गुम होने का जोखिम रहता है। बैंक लॉकर में रखने पर अतिरिक्त खर्च हो सकता है। इसलिए जो लोग केवल निवेश के लिए सोना खरीदना चाहते हैं, उन्हें आभूषणों के बजाय कम अतिरिक्त लागत वाले विकल्पों पर विचार करना चाहिए।

### गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ ऐसे निवेश फंड हैं, जिनकी इकाइयां शेयर बाजार में खरीदी और बेची जाती हैं। ये आमतौर पर भौतिक सोने में निवेश करते हैं और सोने की कीमत में होने वाले बदलाव के अनुरूप रिटर्न देने का लक्ष्य रखते हैं। इस तरह निवेशक को घर में सोना रखने, उसकी सुरक्षा करने या शुद्धता की जांच कराने की चिंता नहीं करनी पड़ती। गोल्ड ईटीएफ में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट और ट्रेडिंग खाते की जरूरत होती है। निवेशक बाजार खुलने के दौरान प्रचलित भाव पर यूनिट खरीद या बेच सकता है। हालांकि, वास्तविक लेनदेन मूल्य बाजार में मांग-आपूर्ति, खरीद-बिक्री के अंतर और फंड की शुद्ध परिसंपत्ति कीमत से प्रभावित हो सकता है। इस विकल्प में फंड का प्रबंधन खर्च, ब्रोकरेज और अन्य लागू शुल्क रिटर्न को प्रभावित कर सकते हैं। निवेश से पहले एक्सपेंस रेशियो, कारोबार की मात्रा और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर की तुलना करनी चाहिए। केवल किसी ईटीएफ की एक यूनिट का भाव कम होने से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि वह दूसरे फंड से सस्ता है। अलग-अलग फंड की एक यूनिट के पीछे सोने की मात्रा अलग हो सकती है।

### गोल्ड म्यूचुअल फंड

जिन निवेशकों के पास डीमैट खाता नहीं है या जो हर महीने नियमित रकम निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक विकल्प हो सकते हैं। ऐसे फंड आमतौर पर गोल्ड ईटीएफ की इकाइयों में निवेश करते हैं। निवेशक इनमें एकमुश्त रकम लगा सकता है या अपनी क्षमता के अनुसार व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) के जरिए नियमित निवेश कर सकता है। इन फंडों में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट खाते की आवश्यकता नहीं होती। निवेशक संबंधित म्यूचुअल फंड की प्रक्रिया के अनुसार सीधे निवेश कर सकता है।

### तीनों विकल्पों में कैसे करें तुलना?

- **कुल लागत:** फिजिकल गोल्ड में मेकिंग चार्ज, जीएसटी और खरीद-बिक्री का अंतर देखें। ईटीएफ व म्यूचुअल फंड में कुल खर्च की तुलना करें।
- **निवेश की सुविधा:** नियमित मासिक निवेश के लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक हो सकता है, जबकि बाजार में खुद यूनिट खरीदने-बेचने के लिए ईटीएफ उपयोगी है।
- **सुरक्षा:** फिजिकल गोल्ड की सुरक्षा निवेशक की जिम्मेदारी है। डिजिटल निवेश विकल्पों में भौतिक भंडारण की चिंता नहीं होती, लेकिन बाजार और फंड से जुड़े जोखिम बने रहते हैं।
- **निकासी:** निवेश से पैसा निकालने की प्रक्रिया और उसमें लगने वाले समय को समझें। ईटीएफ की बिक्री बाजार के कारोबार पर निर्भर करती है, जबकि म्यूचुअल फंड में लागू निकासी नियम महत्वपूर्ण हैं।
- **कराधान:** कर नियम निवेश के प्रकार, खरीद की तारीख और लागू कानूनों के अनुसार अलग हो सकते हैं। इसलिए पुराने नियमों के आधार पर अनुमान लगाने के बजाय निवेश के समय मौजूदा कर प्रावधानों की पुष्टि करें।

### पोर्टफोलियो में संतुलन जरूरी

सोने में निवेश का उद्देश्य केवल अधिकतम मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लाना भी हो सकता है। हालांकि, सोने की कीमतें भी घटती-बढ़ती हैं और कोई भी विकल्प निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं देता। गोल्ड ईटीएफ और गोल्ड म्यूचुअल फंड में निवेश करने से सोने की कीमतों से जुड़ा जोखिम समाप्त नहीं होता। निवेशकों को अपनी पूरी बचत सोने में लगाने के बजाय उसे अन्य निवेश साधनों के साथ संतुलित रखने पर विचार करना चाहिए। आपातकालीन जरूरतों के लिए पर्याप्त नकदी और अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुरूप निवेश योजना भी जरूरी है।

# 14 साल में 5 करोड़ जोड़ना लक्ष्य तो निवेश की रणनीति में करें बदलाव

बिजनेस डेस्क

नौकरी शुरू करने के बाद हर व्यक्ति चाहता है कि एक समय ऐसा आए, जब उसे रोजी-रोटी के लिए काम करने की मजबूरी न रहे। आर्थिक स्वतंत्रता का यही सपना युवाओं को जल्दी निवेश शुरू करने के लिए प्रेरित करता है, लेकिन यदि कोई 28 वर्ष की उम्र में 70 हजार रुपये मासिक वेतन पाता हो और 42 वर्ष की उम्र में नौकरी छोड़कर रिटायर होना चाहता हो, तो उसके सामने चुनौती बड़ी है।

खासकर तब, जब उसका लक्ष्य 5 करोड़ रुपये फंड तैयार करना हो। इसी सवाल को समझने के लिए एक वित्तीय प्रयोग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटजीपीटी से निवेश योजना तैयार कराई गई। इसमें 25 हजार की मासिक व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी), हर साल निवेश में 10% बढ़ोतरी और निवेश पर सालाना 15% प्रभावी प्रतिफल की धारणा रखी गई। अनुमान के मुताबिक, 14 साल तक नियमित निवेश करने के बाद भी 42 वर्ष की उम्र में करीब 2.10 करोड़ ही जुट पाएंगे। यानी 5 करोड़ के लक्ष्य से लगभग 2.90 करोड़ रुपये कम रह जाएंगे।




25 हजार की एसआईपी और हर साल 10% निवेश बढ़ाने पर 42 साल की उम्र तक जुटेंगे 2.10 करोड़

### 70000 की आय में कितनी गुंजाइश

निवेश योजना बनाने से पहले आय और खर्च का हिसाब समझना जरूरी है। इस उदाहरण में निवेशक नोएडा में रहता है और उसकी मासिक आय 70 हजार रुपये है। इसमें से 14 हजार मकान के किराये पर खर्च होते हैं। राशन और घरेलू जरूरतों पर 5 हजार, बिजली-पानी पर 2 हजार, इंटरनेट और मोबाइल पर 1,500 तथा परिवहन पर 2 हजार खर्च होते हैं। बाहर खाने और अन्य मनोरंजन पर 5 हजार, व्यक्तिगत खरीदारी पर 3 हजार, बीमा और चिकित्सा पर 2,500 तथा परिवार की मदद और दूसरे विविध खर्चों पर 10 हजार खर्च होते हैं। इस तरह कुल मासिक खर्च 45 हजार बैठता है और निवेश के लिए 25 हजार बचते हैं। यानी निवेशक अपनी आय का लगभग 35.7% निवेश कर सकता है। पूरी बची रकम एसआईपी में लगाने से पहले आपातकालीन जरूरतों, अनियमित खर्चों व पर्याप्त बीमा की व्यवस्था करना जरूरी है।

### हर वर्ष बढ़ेगी एसआईपी फिर लक्ष्य अधूरा

योजना में माना गया कि निवेशक की सैलरी हर साल 10% बढ़ेगी और वह अपनी एसआईपी में भी उतनी ही बढ़ोतरी करेगा। शुरुआत में 25 हजार की मासिक एसआईपी से सालाना 3 लाख निवेश होंगे। दूसरे वर्ष मासिक निवेश बढ़कर 27,500 और तीसरे वर्ष 30,250 हो जाएगा। पांचवें वर्ष तक मासिक एसआईपी करीब 36,603 पहुंचने का अनुमान है। दसवें वर्ष में यह लगभग 58,949 और चौदहवें वर्ष में करीब 86,307 हो जाएगी। इस गणना के अनुसार, 14 वर्षों में निवेशक अपनी जेब से कुल लगभग 83.92 लाख लगाएगा। यदि निवेश पर 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता है, तो कुल निवेश का मूल्य करीब 2.10 करोड़ हो सकता है। इसमें लगभग 1.26 करोड़ संभावित निवेश वृद्धि से आएंगे।

### 5 करोड़ जुटाने में लगेंगे 19 साल

यदि निवेशक इसी योजना पर चलता रहे, एसआईपी हर साल 10% बढ़ाता रहे और 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता रहे, तो 5 करोड़ का लक्ष्य लगभग 18 साल 10 महीने में हासिल होने का अनुमान है। यानी 28 वर्ष की उम्र में निवेश शुरू करने वाला व्यक्ति करीब 47 वर्ष की उम्र में इस लक्ष्य तक पहुंच सकता है। यह उसकी निर्धारित रिटायरमेंट उम्र से लगभग पांच साल बाद है। इससे स्पष्ट है कि केवल नियमित एसआईपी और वेतन के साथ बढ़ते निवेश पर निर्भर रहकर 42 वर्ष में 5 करोड़ जुटाना इस योजना के तहत संभव नहीं दिखता। लक्ष्य हासिल करने के लिए निवेश की रकम बढ़ानी होगी, मौजूदा बचत का सहारा लेना होगा, अतिरिक्त आय के स्रोत तलाशने होंगे या रिटायरमेंट की समयसीमा में बदलाव करना होगा।

### लक्ष्य पाने के लिए क्या बदलना होगा

सबसे पहले, वेतन बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। यदि हर साल वेतन में 10% की वृद्धि होती है, तो खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ाना जरूरी नहीं है। वेतन वृद्धि का एक अतिरिक्त हिस्सा निवेश में लगाने से लंबी अवधि में बड़ा अंतर आ सकता है। बोनस या दूसरी अतिरिक्त आय का कुछ हिस्सा भी वित्तीय लक्ष्यों के लिए रखा जा सकता है। दूसरा, निवेश में विविधता बनाए रखना जरूरी है। लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड पूंजी बढ़ाने की संभावना दे सकते हैं, लेकिन इनमें बाजार का जोखिम भी रहता है। ऋण आधारित निवेश और दूसरे साधनों का चयन निवेशक की जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए। केवल जल्दी लक्ष्य हासिल करने के लिए अत्यधिक जोखिम लेना समझदारी नहीं है। तीसरा, महंगाई को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

आज के 5 करोड़ और 14 साल बाद के 5 करोड़ की क्रय शक्ति समान नहीं होगी। इसलिए रिटायरमेंट के समय के खर्च, स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों और भविष्य की महंगाई को ध्यान में रखकर लक्ष्य तय करना चाहिए। कर, निवेश शुल्क और रिटायरमेंट के बाद नियमित निकासी का असर भी गणना में शामिल होना चाहिए।

### रिटायरमेंट का लक्ष्य बड़ी रकम नहीं

जल्दी रिटायर होने का अर्थ केवल निवेश खाते में बड़ी रकम जमा करना नहीं है। यह भी तय करना होगा कि रिटायरमेंट के बाद हर महीने कितना खर्च होगा, जमा पूंजी कितने वर्षों तक चलनी चाहिए और आपातकालीन जरूरतों के लिए कितनी रकम अलग रखनी होगी। यदि रिटायरमेंट के बाद कोई नियमित आय नहीं होगी, तो निवेश से निकासी की योजना और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।




# स्मॉलकैप फंड में 25% तक रिटर्न, लेकिन निवेश से पहले जोखिम समझना भी जरूरी

बचत मंत्र

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में तेजी के दौरान स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड निवेशकों को आकर्षित करते हैं। छोटी कंपनियों में कारोबार बढ़ाने और तेजी से आगे निकलने की क्षमता होती है, इसलिए इनमें निवेश करने वाले फंड लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देने की संभावना रखते हैं। लेकिन यही निवेश बाजार में गिरावट आने पर बड़ा नुकसान भी करा सकता है। वर्ष 2025 की जनवरी-मार्च तिमाही में प्रमुख स्मॉलकैप फंडों को करीब 13 से 14 प्रतिशत तक नुकसान हुआ। वर्ष 2026 की पहली तिमाही में भी इस श्रेणी के फंडों में लगभग 12 से 13 प्रतिशत की गिरावट आई। इसके बाद अप्रैल-जून 2026 में स्मॉलकैप फंडों में करीब 23 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली। यह उतार-चढ़ाव बताता है कि इस श्रेणी में रिटर्न की संभावना के साथ जोखिम भी काफी अधिक है। इक्विटीमास्टर की 20 अक्टूबर 2026 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न के आधार पर क्वांट स्मॉलकैप, बंधन स्मॉलकैप, इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप और बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप प्रमुख फंडों में शामिल हैं। इनका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न करीब 22.5 से 25 प्रतिशत के बीच रहा है।

### क्वांट स्मॉलकैप फंड

पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न में क्वांट स्मॉलकैप फंड करीब 25.04 प्रतिशत के साथ पहले स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 17.84 प्रतिशत है। फंड के प्रमुख निवेश में एचएफसीएल, आरबीएल बैंक, अडाणी एंटरप्राइजेज, अडाणी पावर और एजिस लॉजिस्टिक्स शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 18.2 प्रतिशत रही।

### बंधन स्मॉलकैप फंड

बंधन स्मॉलकैप फंड लगभग 24.4 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ दूसरे स्थान पर है। रिपोर्ट में इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 19 प्रतिशत बताया गया है। इसकी खासियत बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रमुख फंडों में इसका शार्प और सॉर्टिनो अनुपात बेहतर रहा है। ये अनुपात बताते हैं कि किसी फंड ने कितना जोखिम उठाकर कितना रिटर्न दिया। इस फंड का आकार तेजी से बढ़ा है। मार्च 2022 में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 1,410 करोड़ रुपये थी, जो अगस्त 2026 में बढ़कर लगभग 34,180 करोड़ रुपये हो गई।

### इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 24.05 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ तीसरे स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न 18.49 प्रतिशत रहा, जबकि निफ्टी स्मॉलकैप 250 का रिटर्न 12.42 प्रतिशत था। तीन साल की अवधि में भी इस फंड का प्रदर्शन अपने बेंचमार्क से बेहतर रहा। फंड का निवेश विभिन्न कंपनियों में फैला है। इसकी प्रमुख हिस्सेदारियों में साई लाइफ साइंसेज, इटर्नल, एम्बर एंटरप्राइजेज, आदित्य इन्फोटेक और कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज शामिल हैं।

### निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड इस श्रेणी के बड़े फंडों में शामिल है। रिपोर्ट में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 81,000 करोड़ है। इसका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न लगभग 24 प्रतिशत और वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 17.1 प्रतिशत रहा। फंड के पोर्टफोलियो में बड़ी संख्या में शेयर शामिल हैं और किसी एक कंपनी में निवेश का हिस्सा अपेक्षाकृत सीमित रखा गया है। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की अस्थिरता शीर्ष पांच फंडों में सबसे कम, करीब 17.5 प्रतिशत रही।

### बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 22.55 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ पांचवें स्थान पर है। इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 18.75 प्रतिशत रहा। इसके प्रत्यक्ष निवेश विकल्प का वार्षिक व्यय अनुपात 0.42 प्रतिशत बताया गया है। रिपोर्ट में इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 20 प्रतिशत बताई गई है, शीर्ष पांच फंडों में सबसे अधिक है।

### इन बातों का रखें ध्यान

स्मॉलकैप फंड में निवेश करने से पहले केवल एक, तीन या पांच साल का रिटर्न देखकर फैसला करना पर्याप्त नहीं है। यह भी देखना चाहिए कि बाजार में गिरावट के दौरान फंड ने कैसा प्रदर्शन किया, उसका पोर्टफोलियो कितना विविध है।

# रिटायरमेंट पर एनपीएस का पूरा पैसा निकालना जरूरी नहीं

**60 साल की उम्र के बाद निकासी टालने और चरणबद्ध तरीके से पैसा लेने के विकल्प**

अलर्ट

बिजनेस डेस्क

नौकरी के दौरान नियमित बचत करके रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड तैयार करना जितना जरूरी है, उतना ही अहम यह तय करना भी है कि रिटायरमेंट के बाद उस पैसे का इस्तेमाल कैसे किया जाए।

**सामान्य निकासी में फड की राशि और ग्राहक की श्रेणी के अनुसार तय होंगे नियम**

नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) में निवेश करने वाले कई लोगों को लगता है कि 60 साल की उम्र पूरी होते ही उन्हें पूरा पैसा निकालना होगा या फिर तुरंत पेंशन शुरू करनी पड़ेगी। लेकिन ऐसा हर स्थिति में जरूरी नहीं है। पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) के नियमों में निवेशकों को निकासी और पेंशन की योजना बनाने के लिए कई विकल्प दिए गए हैं। इनमें एकमुश्त रकम निकालने, निकासी को आगे टालने और निर्धारित अवधि में किस्तों के जरिए पैसा लेने जैसे विकल्प शामिल हैं। हालांकि, कौन-सा विकल्प उपलब्ध होगा और कितनी रकम निकाली जा सकेगी, यह एनपीएस खाते की श्रेणी, कुल जमा फंड और लागू नियमों पर निर्भर करता है। इसलिए रिटायरमेंट के करीब पहुंच रहे निवेशकों को पहले अपने खाते पर लागू प्रावधान समझने चाहिए।




### 60 साल बाद कितना पैसा निकाल सकते हैं?

एनपीएस से सामान्य निकासी के नियम सभी निवेशकों के लिए एक जैसे नहीं हैं। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू नियमों के अनुसार, यदि जमा पेंशन फंड 8 लाख तक है, तो पूरी रकम एकमुश्त निकालने का विकल्प उपलब्ध हो सकता है। इससे अधिक राशि होने पर निकासी की सीमा और शेष रकम के इस्तेमाल के नियम लागू होते हैं। कुछ परिस्थितियों में 8 लाख से अधिक और 12 लाख तक के फंड के लिए भी अलग विकल्प दिए गए हैं। बड़े फंड के मामले में लागू नियमों के अनुसार एक हिस्सा एकमुश्त निकाला जा सकता है, जबकि शेष रकम का इस्तेमाल एन्युटी खरीदने या निर्धारित अवधि में चरणबद्ध निकासी के लिए किया जा सकता है। सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए अलग प्रावधान लागू हो सकते हैं। इसलिए यह मान लेना ठीक नहीं है कि हर एनपीएस खाताधारक को अनिवार्य रूप से केवल 60% रकम ही निकालने की अनुमति है।एनपीएस के पुराने नियमों में सामान्य निकासी के समय अधिकतम 60% रकम एकमुश्त निकालने और कम से कम 40% रकम से एन्युटी खरीदने का प्रावधान प्रमुख था। बाद के संशोधनों में कुछ श्रेणियों के लिए विकल्पों का विस्तार किया गया है। ऐसे में निकासी का निर्णय लेने से पहले नवीनतम नियम और अपने खाते की श्रेणी की पुष्टि करना जरूरी है।

### निकासी टालने का विकल्प

यदि किसी निवेशक को 60 साल की उम्र में तुरंत पूरे फंड की जरूरत नहीं है, तो वह नियमों के अनुसार निकासी या एन्युटी खरीदने की प्रक्रिया को आगे टालने पर विचार कर सकता है। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू प्रावधानों के तहत पात्र निवेशक 75 साल की उम्र तक खाते में बने रहने या निकासी को स्थगित करने के विकल्प का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस दौरान खाते में निवेशित रकम बाजार के प्रदर्शन के अनुसार बढ़ या घट सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि फंड पर निश्चित ब्याज मिलता रहेगा। इक्विटी और बॉन्ड में निवेश की मात्रा के अनुसार जोखिम और संभावित रिटर्न बदल सकते हैं।

### किस्तों में पैसा लेने की सुविधा

एनपीएस में चरणबद्ध निकासी के विकल्प भी उपलब्ध हैं। इसके तहत पात्र निवेशक पूरी निकासी एक साथ करने के बजाय निर्धारित अंतराल पर रकम ले सकते हैं। कुछ विकल्पों में एकमुश्त निकासी वाली रकम को किस्तों में लेने की सुविधा मिलती है, जबकि व्यवस्थित यूनिट निकासी के तहत निवेश की यूनिटें निर्धारित समय के अनुसार भुनाई जाती हैं। यह व्यवस्था म्यूचुअल फंड की व्यवस्थित निकासी योजना जैसी लग सकती है, लेकिन दोनों को एक जैसा नहीं समझना चाहिए।

### एन्युटी से कैसे मिलेगी पेंशन?

एन्युटी एक ऐसा वित्तीय उत्पाद है, जिसे बीमा कंपनी से खरीदने पर चुनी गई योजना की शर्तों के अनुसार नियमित पेंशन मिलती है। एनपीएस में लागू नियमों के तहत कुछ स्थितियों में फंड का एक हिस्सा एन्युटी खरीदने के लिए इस्तेमाल करना पड़ता है। इससे रिटायरमेंट के बाद नियमित आय का स्रोत बन सकता है। एन्युटी खरीदने से पहले उसकी पेंशन दर, भुगतान की शर्तें, जीवनसाथी को मिलने वाले लाभ और मृत्यु के बाद खरीद मूल्य की वापसी जैसे विकल्पों को समझना चाहिए। अलग-अलग योजनाओं में मिलने वाली पेंशन और शर्तें अलग हो सकती हैं। एन्युटी का चुनाव केवल अनुमानित मासिक पेंशन देखकर नहीं करना चाहिए।

### इन बातों पर दें ध्यान

सबसे पहले अपने एनपीएस खाते की श्रेणी और जमा फंड की मौजूदा राशि की जांच करें। इसके बाद यह तय करें कि रिटायरमेंट के बाद मासिक खर्च चलाने के लिए कितनी रकम चाहिए और अन्य स्रोतों से कितनी आय मिलेगी। यदि तुरंत बड़ी रकम की जरूरत है, तो एकमुश्त निकासी का विकल्प उपयोगी हो सकता है। वहीं नियमित आय की जरूरत होने पर एन्युटी या चरणबद्ध निकासी पर विचार किया जा सकता है। खाते में नामांकित व्यक्ति, बैंक खाते और अन्य जरूरी विवरण भी अपडेट रखें। निकासी से जुड़े कर नियमों की पुष्टि करना न भूलें। यह मानकर न चलें कि एनपीएस से निकाली गई हर रकम और उससे बाद में होने वाली कमाई हमेशा कर-मुक्त होगी।

## आरएचपी में कारोबार, वित्तीय स्थिति, प्रमोटर्स के रिकॉर्ड को देखें

# आईपीओ में पैसा लगाने से पहले परखें कंपनी की असली ताकत

- गई रकम के इस्तेमाल और शेयर के मूल्यांकन की भी जांच जरूरी
- केवल लिस्टिंग गेन की उम्मीद में निवेश करना पड़ सकता है भारी

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में जब भी किसी कंपनी का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) आता है, निवेशकों के बीच उसे लेकर उत्सुकता बढ़ जाती है। ग्रे मार्केट प्रीमियम, संभावित लिस्टिंग गेन और दूसरे निवेशकों की दिलचस्पी के आधार पर कई लोग आवेदन करने का फैसला कर लेते हैं, लेकिन किसी आईपीओ में भारी मांग होना इस बात की गारंटी नहीं है कि कंपनी भी उतनी ही मजबूत है या उसके शेयर से अच्छा मुनाफा मिलेगा। कई बार आकर्षक प्रचार के पीछे कमजोर वित्तीय स्थिति, बढ़ता कर्ज या जरूरत से ज्यादा मूल्यांकन छिपा हो सकता है। ऐसे में निवेशकों के लिए जरूरी है कि वे कंपनी की असली स्थिति समझने के बाद ही पैसा लगाने का फैसला करें। इसके लिए रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (आरएचपी) एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें कंपनी के कारोबार, वित्तीय प्रदर्शन, जोखिम, प्रबंधन, प्रमोटर्स और आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम के इस्तेमाल की जानकारी दी जाती है। दस्तावेज बड़ा जरूर होता है, लेकिन कुछ अहम पहलुओं पर ध्यान देकर निवेशक बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

### 1. कंपनी का कारोबार और कमाई का आधार समझें

आईपीओ में निवेश करने से पहले सबसे पहले यह समझें कि कंपनी क्या कारोबार करती है, उसके ग्राहक कौन हैं और उसकी कमाई किन उत्पादों या सेवाओं से होती है। यह भी देखें कि कंपनी जिस क्षेत्र में काम करती है, वहां भविष्य में कारोबार बढ़ने की कितनी संभावनाएं हैं और प्रतिस्पर्धा कितनी कड़ी है। केवल कंपनी के विस्तार संबंधी दावों पर भरोसा करना पर्याप्त नहीं है। पिछले तीन वित्तीय वर्षों की बिक्री, मुनाफे और नकदी प्रवाह के आंकड़ों की तुलना करें। अगर बिक्री लगातार बढ़ रही है, लेकिन मुनाफा स्थिर है या घट रहा है, तो इसकी वजह जानना जरूरी है। इसी तरह, कंपनी के खाते में मुनाफा दिखने के बावजूद अगर उसके नियमित कारोबार से पर्याप्त नकदी नहीं आ रही है, तो यह चिंता का संकेत हो सकता है। यह भी देखें कि कंपनी की कमाई कुछ ही बड़े ग्राहकों पर निर्भर तो नहीं है।

### 2. प्रमोटर्स और प्रबंधन का पिछला रिकॉर्ड जांचें

कंपनी की सफलता में उसके प्रबंधन और प्रमोटर्स की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए आरएचपी में उनके अनुभव, पिछली कारोबारी गतिविधियों और कंपनी चलाने के तरीके से जुड़ी जानकारियों पर ध्यान दें। देखें कि प्रमोटर्स ने पहले किन कारोबारों में काम किया है और उनका रिकॉर्ड कैसा रहा है। कंपनी के प्रमुख अधिकारियों के वेतन, प्रमोटर्स की हिस्सेदारी और गिरवी रखे गए शेयरों की जानकारी भी उपयोगी हो सकती है। इसके अलावा, कंपनी या उसके प्रमुख अधिकारियों के खिलाफ चल रहे महत्वपूर्ण कानूनी मामलों, नियामकीय कार्रवाई और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े खुलासों को ध्यान से पढ़ें।

### 3. प्रमोटर्स से जुड़ी कंपनियों के लेनदेन पर नजर रखें

कई कंपनियां अपने प्रमोटर्स, उनके परिवार के सदस्यों या उनसे जुड़ी दूसरी संस्थाओं के साथ कारोबार करती हैं। इन्हें संबंधित पक्षों के साथ लेनदेन कहा जाता है। ऐसे लेनदेन अपने आप में गलत नहीं हैं, लेकिन इनकी रकम, शर्तों और कारोबारी औचित्य की जांच जरूरी है। आरएचपी में देखें कि कंपनी प्रमोटर्स से जुड़ी संस्थाओं को कितना भुगतान करती है, उनसे कितना सामान या सेवाएं खरीदती है और उन्हें कितना पैसा देती है। यह भी समझें कि लेनदेन सामान्य कारोबारी शर्तों पर हो रहा है या नहीं। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों में अचानक बड़ी बढ़ोतरी, असामान्य भुगतान या संबंधित पक्षों के साथ लगातार बढ़ते लेनदेन दिखाई दें, तो उनकी वजह तलाशें।

### 4. आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम का इस्तेमाल जानें

आईपीओ में आवेदन करने से पहले यह समझना जरूरी है कि कंपनी निवेशकों से पैसा क्यों जुटा रही है। आम तौर पर आईपीओ में फ्रेश इश्यू और ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) शामिल हो सकते हैं। फ्रेश इश्यू में कंपनी नए शेयर जारी करके रकम जुटाती है, जबकि ओएफएस में मौजूदा शेयरधारक अपने शेयर बेचते हैं। ओएफएस से मिलने वाली रकम कंपनी के बजाय शेयर बेचने वाले निवेशकों को मिलती है। आरएचपी में देखें कि फ्रेश इश्यू से मिलने वाले पैसे का इस्तेमाल किस उद्देश्य से किया जाएगा। कंपनी कर्ज चुकाना चाहती है, नई उत्पादन क्षमता स्थापित करना चाहती है, कारोबार का विस्तार करना चाहती है या सामान्य कॉरपोरेट जरूरतों के लिए रकम जुटा रही है? इन उद्देश्यों का कंपनी की भविष्य की वृद्धि पर क्या असर पड़ सकता है, इसे समझें। अगर कंपनी कर्ज चुकाने के लिए पैसा जुटा रही है, तो इससे उसकी वित्तीय स्थिति में सुधार हो सकता है।

### 5. शेयर का मूल्यांकन और जोखिम जरूर परखें

अच्छी कंपनी का आईपीओ भी खराब निवेश साबित हो सकता है, अगर उसके शेयर बहुत महंगे मूल्य पर पेश किए जा रहे हों। इसलिए कंपनी की वित्तीय स्थिति के साथ उसके मूल्यांकन की तुलना भी जरूरी है। आरएचपी में कंपनी की प्रति शेयर आय, मूल्य-आय अनुपात (पी/ई), शुद्ध परिसंपत्ति मूल्य और दूसरी वित्तीय जानकारियों को देखें। समान कारोबार करने वाली सूचीबद्ध कंपनियों के मूल्यांकन से इसकी तुलना करें। यह समझने की कोशिश करें कि कंपनी जिस कीमत पर शेयर पेश कर रही है, क्या उसका आधार मौजूदा कमाई, भविष्य की वृद्धि और कारोबारी संभावनाओं से मेल खाता है।

## खबर संक्षेप




### पोलियो एक जानलेवा व गंभीर बीमारी:डॉ. राज

**भिवानी।** रामगोपाल विद्या दर्पण स्कूल में रोटरी क्लब द्वारा विश्व पोलियो दिवस पर संगोष्ठी व जनजागरूकता रैली का आयोजन किया। संगोष्ठी का विषय पोलियो और उसकी रोकथाम रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य विनोद शर्मा ने की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. राज मेहता व प्रोजेक्ट चेयरमैन रोटेरियन योगेश मेहता रहे। डॉ. राज मेहता ने कहा पोलियो एक जानलेवा व गंभीर बीमारी है, जो इंसान को बचपन से ही अपंग बना देती है और पोलियो का जो वायरस है वह संक्रमित वायरस होता है जो संक्रमित व्यक्ति के मल या खांसी से दूषित हुए भोजन, पानी के जरिए दूसरे व्यक्ति में फैल सकता है।



### मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे की मांग की

**चरखी दादरी।** बौंद कलां ब्लॉक में कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन एवं वोट बचाओ, देश बचाओ अभियान के तहत रोष प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व ब्लॉक अध्यक्ष सतबीर फौगाट ने किया। हरियाणा प्रदेश सेवादल अध्यक्ष एवं अभियान की जिला प्रभारी डॉ. पूनम चौहान और हरियाणा प्रदेश कांग्रेस महिला सेवादल अध्यक्ष सुनीता शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुईं। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग उठाते हुए प्रतीकात्मक पुतला दहन किया।

### बीके कॉलेज में किया नए विद्यार्थियों का स्वागत

**बवानीखेड़ा।** बीके शिक्षण महाविद्यालय, बवानी खेड़ा में नवप्रवेशित बीएड सत्र 2026–28 के विद्यार्थियों के स्वागत एवं मार्गदर्शन हेतु इंडक्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को बी.एड. पाठ्यक्रम, शैक्षणिक गतिविधियों तथा भावी शिक्षण करियर से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करना था। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को बी.एड. के पाठ्यक्रम, प्रायोगिक कार्य, विषय संयोजन, परियोजना कार्य, शिक्षण प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी तथा कॉलेज की विभिन्न गतिविधियों एवं शैक्षणिक कैलेंडर के बारे में विस्तार से अवगत कराया गया।

### 58 प्रतिभागियों ने योग के बारे में जानकारी ली

**चरखी दादरी।** हरियाणा में विद्यार्थियों को बचपन से ही योग के प्रति जागरूक करने और स्वस्थ जीवनशैली विकसित करने के उद्देश्य से योग को जल्द ही पाठ्यक्रम में शामिल करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। शिक्षा विभाग की इस पहल को विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। पीएमश्री राजकीय कन्या वमा विद्यालय दादरी में योग प्रशिक्षण के प्रथम बैच में 58 प्रतिभागियों ने योग, स्वास्थ्य और भारतीय ऋषि परंपरा से संबंधित विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त की।

### परिवर्तन योजना का लाभ उठाएं वाहन मालिक

**भिवानी।** एसडीएम एवं आरटीए सचिव महेश कुमार ने एनसीआर क्षेत्र में पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण के चलते वाहन मालिकों से अपील करते हुए कहा है कि 10 वर्ष से पुराने डीजल वाहन या 15 वर्ष से पुराने पेट्रोल वाहनों को स्क्रैप करवाने का अंतिम अवसर है। उन्होंने कहा है कि ट्रांसपोर्ट विभाग की परिवर्तन योजना के अंतर्गत बीएस 6 मानक का नया वाहन खरीदें। सभी पेट्रोल पंप के मालिकों को निर्देश दिए गए हैं कि वे केवल उन्हीं वाहनो लो फ्यूल देगे जिनका वैलिड पॉल्यूशन सर्टिफिकेट होगा।

*महोत्सव के तीसरे दिन वसांस्कृतिक एवं रचनात्मक प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने किया प्रतिभा का प्रदर्शन*

युवा महोत्सव 'उत्कर्ष-2026' का समापन

# हरियाणवी ऑर्केस्ट्रा में टीम कोड आर अव्वल







हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

कस्बा झोझू कलां स्थित महिला महाविद्यालय में चौधरी बंसी लाल विश्वविद्यालय भिवानी के तीन दिवसीय आठवें विश्वविद्यालय युवा महोत्सव 'उत्कर्ष-2026' का शनिवार को उत्साहपूर्ण माहौल में समापन हुआ।

महोत्सव के तीसरे दिन विभिन्न सांस्कृतिक एवं रचनात्मक प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने प्रतिभा का प्रदर्शन किया। पोस्टर मेकिंग, क्विज, हरियाणवी ऑर्केस्ट्रा और पंजाबी काव्य पाठ जैसी विधाओं में प्रतिभागियों ने अपनी कला, ज्ञान और रचनात्मक सोच से दर्शकों को प्रभावित किया। तीसरे दिन आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणामों में पोस्टर मेकिंग में टीम कोड एफ ने प्रथम, टीम आर ने द्वितीय और टीम जेड ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। क्विज प्रतियोगिता में टीम कोड पी पहले, टीम आर दूसरे और टीम एन तीसरे स्थान पर रही। हरियाणवी ऑर्केस्ट्रा में टीम कोड आर ने बाजी मारी, जबकि टीम जेड दूसरे और टीम एम तीसरे स्थान पर रही। पंजाबी काव्य पाठ प्रतियोगिता में टीम कोड पी ने प्रथम स्थान हासिल किया। टीम कोड टी दूसरे और टीम आर तीसरे स्थान पर रही।

### विद्यार्थियों ने प्रस्तुतियों से समां बांधा

महोत्सव के दौरान कव्वाली और हरियाणवी समूह लोकनृत्य सहित विभिन्न सांस्कृतिक विधाओं में भी प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुतियों से समां बांधा। विद्यार्थियों ने लोक संस्कृति, संगीत, साहित्य और कला के माध्यम से अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। अलग-अलग महाविद्यालयों से आए प्रतिभागियों को अपनी प्रस्तुतियां देने और अन्य विद्यार्थियों की कला को समझने का अवसर मिला। तीन दिनों तक चले इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को सांस्कृतिक गतिविधियों से जोड़ने, उनकी रचनात्मक क्षमता को प्रोत्साहित करने और आपसी संवाद को बढ़ावा देना रहा। युवा महोत्सव ने विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में अपनी प्रतिभा निखारने तथा हरियाणवी सहित विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ने का मंच प्रदान किया। महिला महाविद्यालय, झोझू कलां ने विश्वविद्यालय के इस आयोजन की मेजबानी की।

# नशामुक्त समाज की शपथ दिलाई

- नशा समाज को दीमक की तरह खोखला कर रहा, युवाशक्ति अपनी ऊर्जा को देशसेवा में लगाए : बिजेंद्र



भिवानी। बच्चे को दांतों से रस्सी दबाकर झुला झुलाते पहलवान बिजेंद्र सिंह।

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

शनिवार को गांव खरककलां के स्कूल में पहलवान बिजेंद्र सिंह ने छात्र-छात्राओं को जंक फूड और फास्ट फूड से दूर रहने की नसीहत दी। उन्होंने विद्यार्थियों को नशे के भयानक दुष्प्रभावों से अवगत कराते हुए समाज को नशा मुक्त बनाने की शपथ दिलाई और जागरूकता से जुड़े पंपलेट वितरित किए। जागरूकता कार्यक्रम में पहलवान बिजेंद्र ने बच्चों को नियमित व्यायाम करने, पानी, दूध और संतुलित पोषण के महत्व को समझाते हुए अमूल्य हेल्थ टिप्स दिए, ताकि वे एक स्वस्थ शरीर और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकें। पहलवान बिजेंद्र सिंह ने अपने दांतों से कई बालक-बालिकाओं को हवा में झुलाकर अपनी अद्भुत शारीरिक क्षमता का प्रदर्शन किया। प्राचार्या विमला परमार व अध्यापक नवीन, डोली, संगीता, बीना तंवर व तन्नु आदि ने इस सत्र को बच्चों के लिए बेहद ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक बताया। पहलवान बिजेंद्र ने देश के युवाओं के नाम प्रेरणादायी संदेश देते हुए कहा कि युवा देश का भविष्य और रीढ़ हैं।

### भगवान वाल्मीकि प्रकटोत्सव पर आज से होगा धार्मिक कार्यक्रम

**चरखी दादरी।** समस्त वाल्मीकि समाज चरखी दादरी के तत्वावधान में भगवान वाल्मीकि के प्रकटोत्सव के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रमों की शुरुआत 25 अक्टूबर को सायं 8:15 बजे सत्संग से होगी। 26 को दोपहर 12:15 बजे भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। वहीं, 27 को प्रातः 10:15 बजे भंडारे का आयोजन होगा। कार्यक्रम में इनेलो महिला वर्ग की जिला प्रधान इंदु बाला फोगाट मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगी। नप दादरी के चेयरमैन बक्शीराम सैनी, गौरव हिंदू अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

### तिगड़ाना में हीर-रांझा सांग की प्रस्तुति दी



**भिवानी।** तिगड़ाना में महर्षि वाल्मीकि जयंती के उपलक्ष्य में किया सांग का आयोजन महर्षि वाल्मीकि जी के पवन प्रकटोत्सव के उपलक्ष्य में सांगी कलाकार महाशय दीपक जुलाना एवं पार्टी द्वारा किए जा रहे सांगों की कड़ी में शनिवार को हीर रांझा सांग की शानदार प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विशम्बर वाल्मीकि जी पूर्व विधायक हलका बवानी खेड़ा व श्री राम अवतार वाल्मीकि जी रहे। उनके साथ राजेश प्रधान, अजीत प्रधान, कोलड़ राजपूत आदि गणमान्य नेता थे। मंदिर कमेटी के प्रधान किस्मत सिंह ने बताया की जयंती समारोह के तहत 21 अक्टूबर से 24 अक्टूबर तक लगातार सांगा का आयोजन किया जा रहा है। इसके अलावा 25 अक्टूबर की रात को सत्संग करवाया जाएगा व प्रसाद वितरण 26 अक्टूबर सोमवार को सुबह 9:00 बजे से किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान कमेटी के पदाधिकारी मास्टर दलबीर सिंह, सूबेदार नंदराम, मास्टर सतबीर समरवाल के अलावा रामवीर कटारिया, विजय गहलोत, सुरेंद्र लाइनमैन, कर्मवीर दहिया सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति व सॉन्ग प्रेमी मौजूद रहे।

# दुकानों के पीछे गंदगी का अंबार

- दुकानदारों ने कहा-मुख्यमंत्री के आगमन से पहले नपा प्रधान सुंदर अत्री ने इस स्थान को दिया था नया लुक, यहां कचरा प्वाइंट न बनाएं

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा में पुराना नगर पालिका कार्यालय के पास दुकानों के पीछे गंदगी का बुरा हाल है। बताया जाता है कि जहां एक तरफ नगर में सैकड़ों सफाई कर्मचारी होने के बावजूद मुख्य बाजार की दुकानों के पीछे गंदगी का अंबार लगा हुआ है। यहां का नजारा देखकर लगता ही नहीं कि यह बवानी खेड़ा का व्यस्त बाजार है। चारों तरफ प्लास्टिक, कचरा और गंदगी फैली हुई है।




बवानीखेड़ा। टैक्सी स्टैंड के सामने व दुकानों के पीछे फैली गंदगी में मुंह मारते पशु।

### सफाई कर्मचारी तैनात करें

दुकानदारों का कहना है कि नपा में सैकड़ों सफाई कर्मचारी तैनात हैं और नपा को यहां एक-दो सफाई कर्मचारियों की तैनाती करनी चाहिए क्योंकि आसपास की बस्ती के कुछ लोग सुबह-सुबह यहां गंदगी डालते हैं जबकि नपा के वाहन गंदगी एकत्रित करने के लिए पहुंचते हैं, फिर भी हमारी दुकानों के पीछे यह हाल है। अगर यही हाल रहा तो बीमारी फैलना तय है। बरसात में यहां मच्छर और कीड़े हो जाते हैं। दुकानदारों की मानें तो जहां मुख्यमंत्री के आगमन से पहले नपा प्रधान सुंदर अत्री ने मेहनत से इस स्थान को नया लुक देने का काम किया था।

# चेयरमैन ने मुख्यमंत्री व शिक्षामंत्री से की भेंट

- नई अनाजमंडी के पास सेक्टर की 18 एकड़ जमीन शिक्षा विभाग को हस्तांतरित होने के बाद शुरू होगा निर्माण

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

शहर और आसपास के क्षेत्र के युवाओं को उच्च शिक्षा की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से जिला मुख्यालय पर राजकीय कॉलेज के निर्माण की प्रक्रिया जल्द आगे बढ़ने की उम्मीद है। नप चेयरमैन बख्शी सैनी ने इस संबंध में चंडीगढ़ पहुंचकर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और प्रदेश के शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा से मुलाकात की। उन्होंने दोनों नेताओं के समक्ष कॉलेज निर्माण का मुद्दा उठाते हुए जल्द आवश्यक कदम उठाने का आग्रह किया। चेयरमैन बख्शी सैनी ने बताया कि नई अनाजमंडी के साथ सेक्टर की करीब 18 एकड़ जमीन उपलब्ध है। इस जमीन को शिक्षा विभाग के नाम हस्तांतरित किए जाने के बाद कॉलेज निर्माण की प्रक्रिया शुरू होने का रास्ता साफ होगा। उन्होंने कहा कि शहर और आसपास के गांवों के युवा लंबे समय से जिला मुख्यालय पर राजकीय कॉलेज स्थापित करने की मांग कर रहे हैं। कॉलेज बनने से विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए दूसरे शहरों में जाने की परेशानी से राहत मिलेगी।

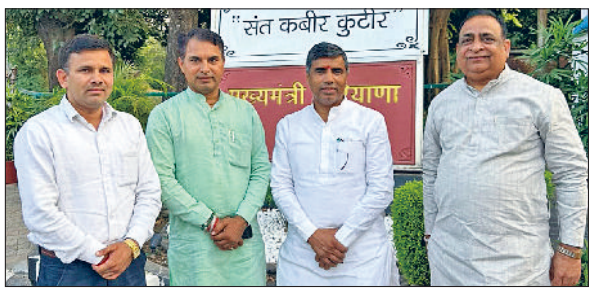


चरखी दादरी। शिक्षा मंत्री से मुलाकात करते चेयरमैन बख्शीराम सैनी।

### कॉलेज निर्माण को लेकर की चर्चा

नप चेयरमैन ने बताया कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से उनके आवास पर हुई मुलाकात के दौरान कॉलेज निर्माण से जुड़े विषय पर विस्तार से चर्चा की गई। उन्होंने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि युवाओं के भविष्य को ध्यान में रखते हुए इस परियोजना को प्राथमिकता के आधार पर आगे बढ़ाया जाए, ताकि कॉलेज का निर्माण जल्द शुरू हो सके। इसके बाद चेयरमैन ने शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा से भी मुलाकात कर जमीन हस्तांतरण और निर्माण प्रक्रिया को गति देने का आग्रह किया। उन्होंने शिक्षा विभाग के स्तर पर आवश्यक निर्देश जारी करवाने की मांग रखी।



### थिएटर पुरुष एकल में कमल शर्मा प्रथम

**बवानीखेड़ा।** हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद, पंचकूला के निर्देशानुसार शिक्षकों की कलात्मक प्रतिभा, रचनात्मकता एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित रंगोत्सव 2026-27 की जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं का शनिवार को सर्वपल्ली राधाकृष्णन लैब स्कूल, भिवानी में रंगारंग समापन हुआ। रंगोत्सव के नोडल अधिकारी संजय सैनी ने बताया कि प्रतियोगिता के अंतर्गत गायन, नृत्य, थिएटर, वाद्य संगीत तथा दृश्य कला सहित विभिन्न विधाओं में प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से शिक्षकों को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने का अवसर मिला। नोडल अधिकारी संजय कुमार ने बताया कि विभिन्न विधाओं में निम्नलिखित प्रतिभागियों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया थिएटर ( पुरुष एकल)कमल शर्मा, विज्ञान अध्यापक, राजकीय मॉडल संस्कृति विमावि, लोहारू, विजुअल आर्ट 3डी मोनिका ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। म्यूजिकल वोकल फोक (महिला) दिवाकशी, राजकीय वमावि, पालुवास, विजुअल आर्ट 2डी सीमा, राजकीय वमावि, ढाणी हनुमान , थिएटर (महिला वर्ग) में मोनिका, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पालुवास, फोक डांस (पुरुष वर्ग) में मनीष कुमार, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बापोड़ा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। म्यूजिकल वोकल फोक (पुरुष वर्ग) मोनू, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ने बाजी मारी।

# साहित्योत्सव 2026 का आगाज

- हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के संवर्धन के साथ युवाओं को सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का बनेगा सशक्त माध्यम : ओमप्रकाश

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था शब्दाक्षर के तत्वावधान में भिवानी में 24 से 26 अक्टूबर तक होने वाले शब्दाक्षर हरियाणा राष्ट्रीय साहित्योत्सव 2026 को लेकर साहित्यिक गतिविधियों का आगाज हो गया है। तीन दिवसीय राष्ट्रीय साहित्य महोत्सव का आगाज प्रसिद्ध श्रीकृष्ण प्रणामी मंदिर परिसर में किया गया। इस अवसर पर शब्दाक्षर के प्रदेश अध्यक्ष ओमप्रकाश शर्मा एवं कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. मुरलीधर शास्त्री ने बताया कि यह साहित्योत्सव हरियाणा सहित देशभर के साहित्य, कला और संस्कृति प्रेमियों के लिए महत्वपूर्ण अवसर साबित होगा। आयोजन में साहित्यकार, कवि, लेखक, विचारक और शोधार्थी हिंदी भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक विरासत से जुड़े विषयों पर विचार-विमर्श करेंगे।



भिवानी। आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित शब्दाक्षर। फोटो : हरिभूमि

### साहित्यिक चेतना मजबूत होगी

डॉ. मुरलीधर शास्त्री ने कहा कि ऐसे आयोजन साहित्यिक चेतना को मजबूत करने के साथ समाज में सकारात्मक विचारों और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करते हैं। विभिन्न राज्यों से आने वाले साहित्यकारों की भागीदारी से अलग-अलग क्षेत्रों की साहित्यिक परंपराओं को जानने और समझने का अवसर मिलेगा। इससे अंतरप्रांतीय सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा मिलेगा और नई पीढ़ी को साहित्य के प्रति प्रेरित किया जा सकेगा।

## न्यूज डायरी

### सीआरपीएफ के एसआई राधेश्याम ने मरणोपरांत भी निभाया राष्ट्रधर्म, किया नेत्र एवं अंगदान



**चरखी दादरी।** वर्दी सिर्फ एक लिबास नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति अंतिम सांस तक समर्पण का संकल्प होती है। एक सच्चा सैनिक जीते जी देश की हिफाजत करता ही है, जाते-जाते भी अपने अस्तित्व से मानवता और मातृभूमि का कर्ज अदा कर जाता है, ऐसा ही अद्भुत और प्रेरणादाई उदाहरण प्रस्तुत किया केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के जांबाज सब-ऑर्डिनेट ऑफिसर शहीद राधेश्याम ने। सीआरपीएफ ग्रुप हेडक्वार्टर्स ग्वेटर नोएडा में तैनात एसआई राधे श्याम दिल्ली के पालम रेलवे प्लेटफॉर्म पर ड्यूटी पर जाते समय दुर्भाग्यपूर्ण रेल हादसे का शिकार हो गए, वे अक्सर कहा करते थे कि उनके शरीर का एक-एक कतरा देश के काम आना चाहिए। अपने इस प्रण को उन्होंने मरणोपरांत भी अमर कर दिया। राधेश्याम के परिवार ने उनकी अंतिम इच्छा का सम्मान करते हुए उनकी आंखें और अन्य जरूरी अंग दिल्ली के दीनदयाल उपाध्याय (डीडी) अस्पताल को दान कर दिए।



### महर्षि वाल्मीकि को किया नमन

**भिवानी।** महर्षि वाल्मीकि जयंती पर युवा जागृति एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट व हनुमान जोहड़ी परिवार धाम के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार से चार दिवसीय धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। कार्यक्रम के पहले दिन शनिवार को हनुमान जोहड़ी मंदिर में महर्षि वाल्मीकि के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। इस दौरान महंत बालयोगी चरणदास महाराज ने उपस्थित श्रद्धालुओं को महर्षि वाल्मीकि के जीवन आदर्शों एवं उनके महान विचारों से विस्तार से अवगत करवाया। महंत चरणदास ने श्रद्धालुओं से आह्वान किया कि वे महर्षि वाल्मीकि के जीवन मूल्यों को अपने दैनिक जीवन में अपनाएं और राष्ट्रहित में पूरी निष्ठा व समर्पण के साथ कार्य करें।

### श्रीमद् देवी भागवत महापुराण कथा में उमड़े श्रद्धालु

**भिवानी।** इन दिनों पूरी तरह से मां भगवती की भक्ति के रंग में सराबोर है। दीपावली पर्व के पावन उपलक्ष्य पर स्थानीय जीतू वाला जोहड़ के समीप स्थित सिद्ध पीठ काली देवी शिव मंदिर में श्रीमद् देवी भागवत महापुराण कथा का आयोजन किया जा रहा है। इस धार्मिक अनुष्ठान के दूसरे दिन शनिवार को श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में पहुंचकर कथा का रसपान किया और पुण्य लाभ कमाया। कथा के दूसरे दिन शनिवार को व्यासपीठ पर विराजमान प्रख्यात कथा प्रवक्ता पंडित बृजमोहन कौशिक ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए देवी भागवत महापुराण के विभिन्न प्रसंगों पर प्रकाश डाला। उन्होंने मां भगवती की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि देवी भागवत का श्रवण करने से मनुष्य के जीवन के सभी कष्ट दूर होते हैं और आत्मिक शांति की प्राप्ति होती है।

कंज्यूमर कोर्ट में स्टाफ के लिए जगह एवं रिकॉर्ड की सुरक्षा के लिए चाहिए दो अतिरिक्त कमरे: युधिष्ठिर

*प्रधान वत्स के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल डीसी से मिला, कंज्यूमर कोर्ट के संचालन में दिक्कतों पर चर्चा*

# कंज्यूमर कोर्ट के सफल संचालन के लिए दो कमरों की मांग की, डीसी ने दिया आश्वासन

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

जिला बार एसोसिएशन के प्रधान अधिवक्ता युधिष्ठिर वत्स के नेतृत्व में अधिवक्ताओं के प्रतिनिधिमंडल ने उपायुक्त साहिल गुप्ता से मुलाकात की। इस शिष्टाचार भेंट के दौरान कंज्यूमर कोर्ट के सुचारू संचालन से जुड़ी महत्वपूर्ण प्रशासनिक समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की। प्रधान युधिष्ठिर वत्स ने उपायुक्त को अवगत करवाया कि वर्तमान में कंज्यूमर कोर्ट का संचालन सप्ताह में एक दिन जिला न्यायालय परिसर में होना सुनिश्चित किया जा चुका है। हालांकि कार्यवाही के लिए केवल एक मुख्य कोर्ट रूम पर्याप्त नहीं है। कोर्ट के स्टाफ के बैठने के लिए कार्यस्थल, जरूरी रिकॉर्ड तथा अन्य गोपनीय दस्तावेजों को सुरक्षित रखने के लिए कम से कम दो अतिरिक्त कमरों की तत्काल आवश्यकता महसूस की जा रही थी।



भिवानी। डीसी साहिल गुप्ता से मुलाकात करता बार एसोसिएशन का प्रतिनिधिमंडल।

### जिला बार एसो. के पदाधिकारियों में खुशी

प्रधान वत्स ने बताया कि कंज्यूमर कोर्ट के सदस्यों द्वारा भी इस व्यवस्थागत समस्या के त्वरित समाधान के लिए लगातार संपर्क किया जा रहा था, जिसके चलते अधिवक्ताओं के प्रतिनिधिमंडल को यह मामला जिला प्रशासन के समक्ष उठाना पड़ा। उपायुक्त गुप्ता ने वकीलों के प्रतिनिधिमंडल द्वारा रखी मांग को गंभीरता से सुना और स्थिति की नजाकत को समझते हुए यथाशीघ्र दो अतिरिक्त कमरे उपलब्ध करवाने का ठोस आश्वासन दिया। प्रशासन की इस सकारात्मक और त्वरित सहयोग के बाद जिला बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों में खुशी हैं। उपायुक्त द्वारा दिखाए संवेदनशीलता व सहयोगात्मक रवैये के लिए प्रधान युधिष्ठिर वत्स एडवोकेट सहित सभी उपस्थित अधिवक्ताओं ने उनका आभार जताया। इस अवसर पर उपप्रधान अशोक यादव, सचिव सचिन सिंगला, राजेश तंवर, कांतिचन्द्र कौशिक, प्रवीण अत्री, विकास पाल परमार, बजरंग लाल शर्मा, हितेंद्र पंवार, सागर कौशिक, नरेंद्र मोहन शर्मा, सौरभ कौशिक, महेश भारद्वाज, प्रवीण शास्त्री, केंद्रमणि, राजेंद्र गौरा व मुनेश आदि मौजूद रहे।

## खबर संक्षेप



### डेंगू पीड़ित महिला को उपलब्ध करवाई प्लेटलेट्स

**भिवानी।** भिवानी के निजी अस्पताल में उपचाराधीन डेंगू पीड़ित महिला मरीज के लिए उस वक्त संकट गहरा गया जब डॉक्टरों ने तीन यूनिट ए पॉजिटिव प्लेटलेट्स की तत्काल आवश्यकता बताई। काफी प्रयासों के बाद जब रक्त का इंतजाम नहीं हो पाया तो घबराए परिजनों ने शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा से संपर्क किया। परिजनों की गंभीर स्थिति को समझते हुए शतकवीर राजेश डुडेजा ने तुरंत अपनी टीम के सदस्य मोहित सोनी, अजय और राजकुमार को इस पुनीत कार्य के लिए प्रेरित किया। डुडेजा की सूचना पर टीम सदस्यों ने तुरंत निजी ब्लड बैंक पहुंचकर रक्तदान किया और समय पर प्लेटलेट्स उपलब्ध करवाकर महिला की जान बचाने का सराहनीय कार्य किया।

### दो आरोपियों के कब्जे से 8.20 ग्राम हेरोइन बरामद

**भिवानी।** पुलिस की एंटी नारकोटिक्स सैल की टीम ने मादक पदार्थ बेचने की फिराक में खड़े दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने उनके कब्जे से 8.20 ग्राम हेरोइन बरामद की है। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार एंटी नारकोटिक्स सैल भिवानी में तैनात एएसआई जसवंत सिंह अपनी पुलिस टीम के साथ गश्त एवं अपराध पड़ताल ड्यूटी के दौरान बंसीलाल चौक, तोशाम पर मौजूद थे। इसी दौरान पुलिस टीम को विश्वसनीय सूत्रों से सूचना प्राप्त हुई कि हांसी रोड पर एक फार्म के पास दो व्यक्ति मादक पदार्थ लेकर खड़े हैं और उसे बेचने की फिराक में हैं।

### जैन मुनि फूलचंद महाराज की पुण्यतिथि पर सामूहिक पाठ

**भिवानी।** हालुवास गेट फाटक पार स्थित जैन मुनि आश्रम में आश्रम के संस्थापक पूज्यश्री जैन मुनि फूलचंद महाराज की पुण्यतिथि पर 25 अक्टूबर रविवार को शाम चार से पांच बजे तक नमस्कार महामंत्र का सामूहिक पाठ किया जाएगा। इस मौके पर आश्रम के संत जैन मुनि मनक कुमार महाराज के द्वारा पूज्यश्री जैन मुनि फूलचंद महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला जाएगा और गुरू की महिमा का बखान किया जाएगा। आश्रम की संचालिका डॉ. उषा जैन ने बताया कि 25 अक्टूबर को शरद पूर्णिमा को पूज्यश्री फूलचन्द महाराज की पुण्यतिथि मनाई जाएगी। इस मौके पर जैन मुनि मनक कुमार महाराज पूज्यश्री जैन मुनि फूलचंद महाराज के जीवन, उनके संघर्ष, साधना-तपस्या व 83 वर्ष पहले आश्रम की स्थापना के संबंध में प्रकाश डालेंगे।

## विकास कार्यों के लिए सरकारी खजाने में धन की कोई कमी नहीं: सर्राफ

# दो करोड़ की दी सौगात सुंदरता एवं स्वच्छता को लगे पंख



भिवानी। उत्तमनगर इलाके में महाराजा नीमपाल सिंह पार्क का शिलान्यास करते हुए। फोटो : हरिभूमि

विधायक व नप चेयरपर्सन ने किया भिवानी संस्थापक महाराज नीमपाल सिंह पार्क का शिलान्यास

### एक एकड़ में फैला होगा महाराजा नीमपाल सिंह पार्क

उत्तमनगर में बनने वाला महाराज नीमपाल सिंह पार्क पर करीब दो करोड़ चार लाख रुपये की राशि खर्च होगी। यह पार्क करीब एक एकड़ में बनाया जाएगा। सुबह शाम लोगों के घुमने के लिए पगडंडियां, फुव्वारें पार्क की शौभा को चार चादं लगाएंगे। पार्क के चारों तरफ ग्रील लगाई जाएंगे,ताकि पार्क में लगाए जाने वाले पेड़ पौधों को कोई नुकसान न पहुंचा सके। इनके अलावा पार्क में छायादार पौधों के अलावा, फल व फूल आदि के पौधे लगाए जाएंगे। लोगों के बैठने के लिए घास भी लगाई जाएंगी। सुबह व शाम के वक्त व्यायाम करने के लिए ओपन जिम भी स्थापित करवाया जाएगा। ताकि पार्क में घुमने वाले जिम पर एक्सरसाइज कर सके। इनके अलावा पार्क में देर सवेर घुमने वाले लोगों के लिए आधुनिक डिजाइन की स्ट्रीट लाइटें लगवाई जाएंगी।

### उक्त इलाके में पहला होगा भव्य पार्क: भवानी प्रताप सिंह

नगरपरिषद के चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने बताया कि ढाढरी व लोहारू रोड की तरफ यह पहला आधुनिक पार्क होगा। भिवानी के संस्थापक महाराजा नीमपाल सिंह के नाम से बनने वाले पार्क में सभी तरह की सुविधाएं होंगी। पार्क में घुमने व व्यायाम करने के लिए ओपन जिम होगा। बच्चो के लिए झुल्ले। पानी के सुंदर फव्वारे हरियाली बढाने के लिए पार्क में घास व छायादार पौधे लगवाए जाएंगे। पार्क का निर्माण कार्य पूरा होने के बाद शहर की स्वच्छता को पंख लग जाएंगे। शहर के सौंदर्यकरण में कोई कमी नहीं छोड़ी जाएगी ।

### ये रहे मौजूद

इस मौके पर नप डीएमसी हरबीर सिंह, कार्यकारी अभियंता जसवंत सिंह, वाइस चेयरपर्सन प्रतिनिधि संदीप तंवर,ठाकुर विक्रम सिंह, पवन ठाकुर, पार्षद संदीप यादव, महाबीर देवसरिया, प्रवीण चावला, मोनू बादशाह, पवन सैनी,कृष्ण शर्मा ,अनिल के अलावा अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

**पार्षद सुभाष तंवर ने बताया कि पूर्वजों स्मरण व उनकी स्मृतियों को संभालने का छोटा सा प्रयास**

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

शहर के लोगों के लिए खुश खबरी। अब भिवानी के संस्थापक महाराजा नीमपाल सिंह के नाम से भव्य पार्क बनने जा रहा है। उक्त पार्क पर करीब दो करोड़ रुपये की लागत आएगी। उक्त पार्क सभी सुविधाओं से सुसज्जित होगा। शनिवार को उत्तमनगर में विधायक घनश्याम सर्राफ व नगरपरिषद चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने संयुक्त रूप से नारियल फोड़कर पार्क का शिलान्यास किया। इस दौरान वार्ड संख्या 17 के पार्षद सुभाष तंवर ने वहां पर मौजूद लोगों का मुंह मीठा करवाया। इस दौरान पार्षद सुभाष तंवर ने बताया कि पुर्वजों स्मरण व उनकी स्मृतियों को संभालने का छोटा सा प्रयास है। पार्षद सुभाष तंवर पिछले नौ साल से भिवानी संस्थापक महाराजा नीमपाल सिंह के नाम से पार्क स्थापित करवाए जाने के लिए प्रयासरत थे। चूंकि भिवानी के संस्थापक महाराजा नीमपाल सिंह के नाम से एक कॉलेज के अलावा अब उनके नाम से पार्क होगा।

### कौन थे महाराजा नीमपाल सिंह

इतिहासकारों के अनुसार 26 फरवरी सन 1376(संवत 1432 फाल्गुन मास) को महाराजा नीमपाल सिंह तंवर ने अपनी पत्नी भानी के नाम पर भानी(भिवानी) रखा गया था7 बाद में बदलकर भ्याणी, भियानी से भिवानी हो गया। बताते है कि वर्तमान में बिचला बाजार क्षेत्र में गेड पर एक जांटी का पेड लगाकर हवन किया गया था। आज भी वह जाटी का पेड पॉवर के पीछे शक्ति मंदिर परिसर में मौजूद है।

### विकास कार्यों की बहेगी गंगा: सर्राफ

विधायक घनश्याम सर्राफ ने बताया कि शहर के बाहरी इलाके में पार्क बनने के बाद शहर की सुंदरता बढेगी। उक्त इलाके के लोगों की कई दिनों से पार्क बनवाए जाने की मांग थी। वह आज नगरपरिषद के माध्यम से पूरी हुई। उन्होंने कहा कि सीएम नायाब सिंह सैनी भिवानी के विकास के लिए दिल खोलकर बजट जारी कर रहे है। जिससे पूरे जिले ही नहीं प्रदेश में विकास कार्यों की गंगा बहने लगी है। पूरे प्रदेश का चहुंमुखी विकास करवाया जा रहा है।

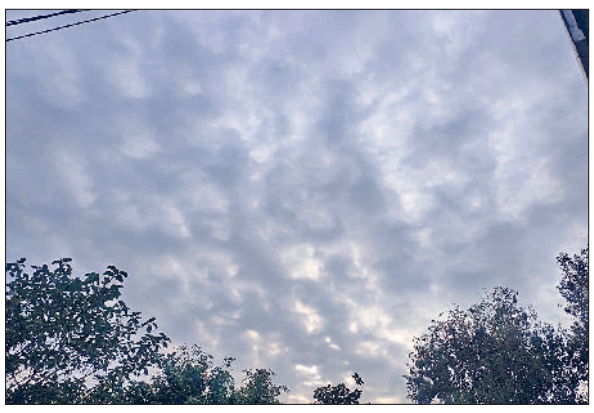

# बादलवाई से लुढ़का पारा बिन बरसे निकले बादल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

शनिवार को दूसरे दिन भी आसमान में बादलवाई बनी रही। कई बार आसमान में काली घटाए छाई,लेकिन बिना बरसे ही आगे निकल गई। हालांकि हवाओं का तेज झौंका जरूर आया,पर बादलों को अपने साथ आगे ले गया। बारिश न होने की वजह से किसानों को मायूसी हाथ ही लगी। चूंकि इस वक्त कई इलाकों में भूमि में नमी की मात्रा कम है। जिस वजह से सरसों फसल की बिजाई असंभव सी लग रही है। अगर हलकी सी भी बारिश हो जाए तो सरसों फसल की सही तरीके से बिजाई हो सकती थी,लेकिन शनिवार को भी बादल बिना बरसे ही आगे निकल गए।

सुबह जब लोग सोकर उठे तो उस वक्त तेज हवा चल रही थी। हवा के साथ काले बादलों से आसमान अट गया। लोगों को लगा कि अभी कुछ ही देर में बारिश होगी,लेकिन बादल बिना बरसे ही आगे निकल गए। उसके बाद दोपहर तक बादलों का इसी तरह से आवागमन रहा,लेकिन बादल बिना बरसे ही आगे निकलते रहे। दोपहर बाद चटक धूप खिली तो लोगों को लगा कि अब आसमान साफ हो जाएगा,पर शाम को करीब सवा चार बजे के आसपास फिर से आसमान में काले बादल छा गए। उस वक्त भी कई बार आसमान से पानी टपकने के आसार बने, पर बारिश न होने से किसानों को निराशा ही हाथ लगी। देर शाम तक इसी तरह का मौसम बना रहा।

### गर्मी से राहत मिलेगी

उल्लेखनीय है कि इस वक्त भूमि में सरसों की बिजाई के लिए पर्याप्त नमी नहीं है। कई जगहों पर नमी है तो कई जगहों पर नमी न होने की वजह से किसान सरसों फसल की बिजाई नहीं कर पा रहे है। अगर हलकी सी भी बारिश हो जाए तो किसान आराम से अपनी फसलों की बिजाई कर सकते है। इनके अलावा कई दिनों से पारा भी 33 डिग्री सेल्सियस के आसपास चल रहा है। अगर हलकी बारिश हो जाती है तो पारा लूढक कर 28 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच आ जाएगा। जिससे लोगों को गर्मी व उमस से राहत मिल सकेगी।

## प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में तनिषा उषा और हसीना की टीम प्रथम

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बहु के वाणिज्य विभाग के तत्वावधान में कॉलेज स्तरीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें बीकॉम प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्राओं के विषय संबंधी ज्ञान को बढ़ावा देना और उनकी शैक्षणिक प्रतिभा को प्रोत्साहित करना रहा। प्रतियोगिता में बीकॉम प्रथम वर्ष की तनिषा, द्वितीय वर्ष की उषा और तृतीय वर्ष की हसीना की टीम ने प्रथम स्थान जीता। बीकॉम प्रथम वर्ष की अक्षरा, द्वितीय वर्ष की शीतल और तृतीय वर्ष की आरती की टीम दूसरे स्थान पर रही। वहीं, बीकॉम प्रथम वर्ष की सविता, द्वितीय वर्ष की सुजाता और तृतीय वर्ष की प्रीति की टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में डॉ. रीना और डॉ. सुचित्रा ने निर्णायक की भूमिका निभाई, जबकि मंच संचालन सुनील कुमार कलकल ने किया। वाणिज्य विभागाध्यक्ष डॉ. मोहन कुमार ने कहा कि इस तरह की शैक्षणिक गतिविधियों से विद्यार्थियों के विषय संबंधी ज्ञान में वृद्धि होती है। साथ ही उनकी तार्किक क्षमता, आत्मविश्वास और टीम भावना को बढ़ावा मिलता है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए महाविद्यालय में समय-समय पर ऐसी प्रतियोगिताएं आयोजित करना महत्वपूर्ण है।

# पहलादगढ़ की 2 महीने 15 दिन की कटड़ी ने हरियाणा में पाया प्रथम स्थान

**पशुपालक पवन कुमार उर्फ मिंटू को 21 हजार और पशु आहार का इनाम**

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

हरियाणा के झज्जर जिले के तहसील बेरी में शनिवार को राज्य स्तरीय पशु मेले का आयोजन किया गया। इस प्रतिष्ठित मेले में प्रदेशभर से बेहतरीन नस्ल के पशुओं ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता के दौरान गांव पहलादगढ़ निवासी पवन कुमार उर्फ मिंटू (व्यापारी एवं पंच) की मात्र 2 महीने 15 दिन की कटड़ी ने अपनी उत्कृष्ट शारीरिक बनावट और नस्ल के दम पर पूरे हरियाणा में प्रथम स्थान प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। इस शानदार उपलब्धि पर विजेता पशुपालक को प्रोत्साहन स्वरूप 21 हजार रुपये की नकद राशि और बड़ी मात्रा में उच्च गुणवत्ता वाला पशु आहार प्रदान किया गया। इस ऐतिहासिक जीत से पूरे गांव और पशुपालक परिवार में जश्न का माहौल है। इस गौरवशाली क्षण पर गांव पहलादगढ़ के सरपंच ज्योति एवं सरपंच प्रतिनिधि अधिवक्ता संदीप पाटिल ने विजेता पशुपालक पवन कुमार को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई दी। ग्राम पंचायत ऐसे होनहार और मेहनती किसानों व पशुपालकों के साथ हमेशा खड़ी है और भविष्य में भी उनका मार्गदर्शन व उत्साहवर्धन करती रहेगी। इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में पहलादगढ़ के पशुपालकों की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि यदि सही लगन और देखरेख के साथ पशुपालन किया जाए तो ग्रामीण क्षेत्रों के लोग प्रदेश स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बना सकते हैं। इस जीत से पंच उषा देवी, विपिन, अनिल कुमार, चंद्रकांत सहित अनेक ग्रामीणों ने खुशी जताई।

### पहलादगढ़ के पशुपालक ने बढ़ाया गांव का मान

अपनी खुशी जाहिर करते हुए सरपंच ज्योति एवं सरपंच प्रतिनिधि अधिवक्ता संदीप पाटिल ने ग्रामीणों के साथ मिलकर लड्डू बांटे और मुंह मीठा कराया। उन्होंने कहा कि हमारे गांव पहलादगढ़ के लिए यह बेहद गर्व का दिन है। पवन कुमार और उनके परिवार ने अपनी मेहनत और पशुओं के प्रति समर्पण से पूरे हरियाणा में हमारे गांव का मान बढ़ाया है। आज के समय में पशुपालन केवल एक व्यवसाय नहीं रहा, बल्कि यह हमारी ग्रामीण संस्कृति और आर्थिकी का एक मजबूत आधार बन चुका है। ऐसी उपलब्धियां हमारे युवाओं और अन्य पशुपालकों को आधुनिक व वैज्ञानिक तरीके से उन्नत नस्ल के पशु पालने के लिए प्रेरित करती हैं।

# बवानी खेड़ा में धूमधाम से मनाया गया संयुक्त राष्ट्र दिवस

**संयुक्त राष्ट्र का मुख्य उद्देश्य युद्ध रोकना, देशों के बीच भाईचारा बढ़ाना और मानवता की सेवा करना है**

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा स्थित वीर शहीद कपिल देव जी राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शुक्रवार को लीगल लिटरेसी क्लब द्वारा संयुक्त राष्ट्र दिवस का आयोजन बड़े उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य दिनेश कुमार ने की। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी राजेंद्र कुमार ने



विद्यार्थियों को बताया कि संयुक्त राष्ट्र का गठन 24 अक्टूबर 1945 को विश्व में शांति, सुरक्षा और मानवाधिकारों की रक्षा के उद्देश्य से किया गया था। इसीलिए हर वर्ष 24 अक्टूबर को पूरे विश्व में संयुक्त राष्ट्र दिवस मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र का मुख्य उद्देश्य युद्ध को रोकना, देशों के बीच आपसी भाईचारा बढ़ाना और मानवता की सेवा करना है। प्राचार्य दिनेश कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि आज के समय में हमें अपने देश के साथ-साथ विश्व शांति के लिए भी कार्य करना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपने जीवन में अनुशासन, कानून का सम्मान और दूसरों के अधिकारों की रक्षा का संकल्प लें। तभी हम सच्चे अर्थों में शांति के दूत बन सकते हैं। लीगल लिटरेसी क्लब द्वारा इस अवसर पर शांति और कानून विषय पर भाषण प्रतियोगिता, नारा लेखन और प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों पर आधारित सुंदर पोस्टर और स्लोगन बनाकर सभी को जागरूक किया। विद्यालय के विद्यार्थियों ने शांति, समानता और मानवाधिकारों के प्रति वचनबद्धता का संकल्प भी लिया।

## बवानी खेड़ा के बाबा कमाल मंदिर में 31 अक्टूबर को होगा मां भगवती जागरण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा नगर के बाबा कमाल मंदिर में बाबा कमाल युवा सेवा समिति के तत्वावधान में 31 अक्टूबर 2026, शनिवार को विशाल माँ भगवती जागरण का आयोजन किया जाएगा। जागरण का शुभारंभ रात्रि 9 बजे होगा और यह माँ की इच्छा तक चलेगा। इस भव्य आयोजन में हिसार से श्रद्धा जागरण ग्रुप विशेष रूप से पहुंचेगा। बाहर से आमंत्रित प्रसिद्ध भजन गायक भजनों के माध्यम से माँ भगवती का गुणगान करेंगे। जागरण में समाजसेवी मास्टर कृष्ण हांडा, सुरेन्द्र कुमार उर्फ रिंकू खुराना, हिसार की बाबा की परी और हांसी के विक्की सिंधु अपनी मधुर वाणी से श्रद्धालुओं को भक्ति रस में सराबोर करेंगे। समिति के सदस्यों ने बताया कि जागरण में अनिल-मंजीत, तिलकधारी की आकर्षक झांकियां भी प्रस्तुत की जाएगी, जो भक्तों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहेंगी। समिति के युवा सदस्य पिछले काफी दिनों से शहर में जागरण को कामयाब करने के लिए सहयोग राशि एकत्रित करने में जुटे हैं और भक्तों के सहयोग से उम्मीद से ज्यादा सहयोग प्राप्त हो रहा है। श्रद्धालु समिति के सदस्यों को स्वयं बुला-बुलाकर सहयोग राशि दे रहे हैं ताकि माता का जागरण सही हो सके और माता रानी का आशीर्वाद उन पर बना रहे। आयोजकों ने बताया कि जागरण में दूर-दूर से श्रद्धालु पहुंचेंगे। माँ के दरबार को विशेष रूप से सजाया जाएगा।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8295154800, 8814999151, 9253681005, 8295157800

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

| साईज | संस्करण | विशेष छूट राशि |
|---|---|---|
| 5 X 8 सें.मी<br>10X 8 सें.मी | स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर | रु. 2000/-<br>रु. 2500/- |

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

**मांग** छह गांवों के किसान पहुंचे उपायुक्त कैंप कार्यालय

# ओलावृष्टि से धान की फसल को हुआ नुकसान, किसानों ने मांगा मुआवजा

- फसल तैयार होने के समय मौसम की मार पड़ने से किसानों की मेहनत पर पानी फिर गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

चरखी दादरी जिले में ओलावृष्टि के कारण धान की फसल को हुए नुकसान के बाद किसानों ने मुआवजे की मांग उठाई है। किसानों ने विशेष गिरदावरी करवाने एवं उचित मुआवजा देने की मांग की। क्षेत्र के गांव कमोद, रावलधी, खातीवास, मिर्च, घिकाड़ा और साहुवास के किसान अपनी मांगों को लेकर शनिवार को उपायुक्त कैंप कार्यालय पहुंचे। किसानों ने प्रशासन से प्रभावित खेतों की विशेष गिरदावरी करवाकर नुकसान का आकलन करने और उचित मुआवजा दिलाने की मांग की। किसानों ने बताया कि एक रोज पूर्व शुक्रवार को हुई ओलावृष्टि से खेतों में धान की फसल प्रभावित हुई है। इससे किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। फसल तैयार होने के समय मौसम की मार पड़ने से उनकी मेहनत पर पानी फिर गया है। किसानों के अनुसार, फसल को हुए नुकसान के चलते उनकी आमदनी प्रभावित होने की आशंका है। ऐसे में प्रभावित किसानों को राहत देने के लिए प्रशासन को जल्द कदम उठाने चाहिए। किसानों ने प्रशासन से आग्रह किया कि ओलावृष्टि से प्रभावित सभी किसानों के खेतों की विशेष गिरदावरी करवाई जाए। गिरदावरी में फसल को हुए नुकसान का सही विवरण दर्ज किया जाए, ताकि पात्र किसानों को नियमानुसार मुआवजा मिल सके। उन्होंने कहा कि नुकसान के आकलन और मुआवजा वितरण की प्रक्रिया में अनावश्यक देरी नहीं होनी चाहिए। किसानों ने प्रशासन से उनकी समस्या पर गंभीरता से विचार करते हुए जल्द राहत प्रदान करने की मांग की।



चरखी दादरी। उपायुक्त कैंप कार्यालय पहुंचे किसान। फोटो : हरिभूमि

### नुकसान का वास्तविक आंकलन किया जाए

किसानों ने कहा कि खेती पर निर्भर परिवारों की आजीविका फसल उत्पादन से जुड़ी हुई है। मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण फसल खराब होने से किसानों के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो सकता है। उन्होंने मांग की कि संबंधित विभाग के अधिकारियों को प्रभावित गांवों में भेजकर खेतों का निरीक्षण कराया जाए और नुकसान का वास्तविक आंकलन किया जाए।

## डिस्कवर योर सेल्फ 2.0 प्रश्नोत्तरी में आदर्श स्कूल प्रेमनगर की टीम प्रथम

चरखी दादरी। दादरी के केदारनाथ अग्रवाल इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में शनिवार को 'डिस्कवर योर सेल्फ 2.0' प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 28 स्कूलों ने पंजीकरण कराया, जिनमें से 25 स्कूलों की टीमों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देकर अपनी प्रतिभा और ज्ञान का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि दादरी एजुकेशन सोसायटी की प्रधान डॉ. विद्या गुप्ता ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर डीएचईओ एवं राजकीय महाविद्यालय दादरी के प्राचार्य डॉ. जेएस मोर भी उपस्थित रहे। डॉ. विद्या गुप्ता ने कहा कि विद्यार्थियों के लिए स्वयं को पहचानना और अपनी क्षमताओं को समझना जरूरी है। उन्हें जीवन में अपने लक्ष्य निर्धारित करने, सही निर्णय लेने और अपनी योग्यता पर विश्वास रखने की दिशा में प्रयास करना चाहिए। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका राजकीय महाविद्यालय, बाढड़ा के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार सांगवान, वैश्य कॉलेज भिवानी की प्रबंधन एवं कंप्यूटर साइंस विभाग की निदेशिका डॉ. प्रोमिला दहिया तथा नॉर्थ इंडिया सिपिरिटा ग्रेनिटो एलएलपी के प्रोजेक्ट मैनेजर विश्वबंधु शर्मा ने निभाई। संस्थान की निदेशिका डॉ. सुप्रिया ढिल्लो ने मुख्य अतिथियों, निर्णायकों, प्रतिभागियों और अध्यापकों का स्वागत किया। प्रतियोगिता के परिणामों में आदर्श वमा विद्यालय दादरी की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। टीम के योगेश और गीताक्षी विजेता रहे। राजकीय मॉडल संस्कृति वमा विद्यालय चरखी दादरी के रवि और गौरांश ने दूसरा स्थान हासिल किया। वहीं वैश्य कन्या वमा विद्यालय दादरी की अनीशा और परीक्षा तीसरे स्थान पर रहीं।



चरखी दादरी। विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते अतिथि व आयोजक।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 25 अक्टूबर 2026

इन दिनों हर तरफ एलन मस्क की टेस्ला रोडस्टर कार को लेकर रॉकेट तकनीक और उड़ने की क्षमताओं से जुड़ी चर्चाएं हो रही हैं। रोडस्टर की प्रस्तावित उत्पादन समय सीमा 2028 बताई गई है। उड़ती हुई कारें निश्चित रूप से भविष्य के परिवहन का एक हिस्सा बन सकती हैं। लेकिन अभी इसे हकीकत बनने में कई सवालों और चुनौतियों का सामना करना होगा।

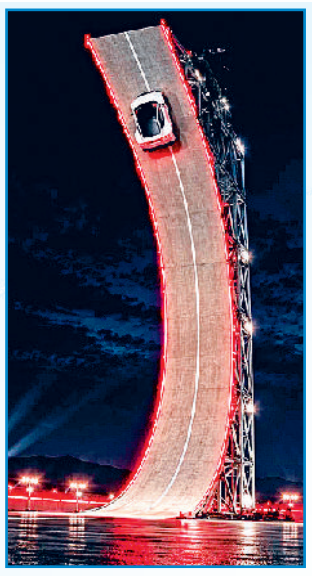



# क्या सच होने वाला है उड़ती कार का सपना !

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

उड़ती हुई कारों का सपना अब केवल विज्ञान कथाओं, हॉलीवुड फिल्मों और भविष्य की कल्पनाओं तक सीमित नहीं है। गुजरे 15 अक्टूबर 2026 को टेक्सास में टेस्ला की ऐसी ही उड़न कार नई रोडस्टर के प्रदर्शन ने इस अनुमान को और मजबूत किया है। एलन मस्क की टेस्ला के अलावा भी दुनिया की कई कंपनियां ऐसी कारों के विकास में काफी हद तक सफल हो चुकी हैं या इसके नजदीक पहुंच चुकी हैं, जो सड़क पर कार की तरह चलने के बजाय हवा में उड़ सकेंगी। कहीं इन्हें फ्लाइंग कार कहा जा रहा है, कहीं इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ एंड लैंडिंग यानी ईवीटीओएल और कहीं एयर टैक्सी। लेकिन एक बुनियादी सवाल अब भी रह-रहकर जेहन में आ रहा है कि क्या हम सचमुच उड़ती हुई कारों के युग की दहलीज पर खड़े हैं या तकनीक की चमक ने भविष्य की तस्वीर को वास्तविकता से कहीं ज्यादा आकर्षक बना दिया है? इस बात को समझना होगा कि सड़क पर चलने वाली कार, रॉकेट से जुड़ा प्रदर्शन और यात्रियों को लेकर उड़ने वाला प्रमाणित विमान- तीनों अलग-अलग चीजें हैं। भविष्य की परिवहन क्रांति को समझने के लिए इस अंतर को ध्यान में रखना जरूरी है।



कई देशों में बन रही ईवीटीओएल



नीदरलैंड में निर्मित पाल-वी लिबर्टी कार

## आसान नहीं सपने का सच होना

बीते 15 अक्टूबर 2026 को एलन मस्क ने स्पेसएक्स की तकनीक से जुड़े थ्रस्टरों की मदद से अमेरिका के टेक्सास में अपनी बहुचर्चित और बहुप्रतीक्षित टेस्ला की नई रोडस्टर कार को एक घुमावदार रैंप से हवा में उछलते, पलटते और जमीन पर उतरते दिखाया और अपनी सपनीली उड़न कार को लेकर असाधारण दावे भी किए हैं। इसके बाद से उड़न कार की चर्चाएं एक बार फिर से सुर्खियों में आ गई हैं। लेकिन उड़ान के जानकारों के मुताबिक इस प्रदर्शन को सामान्य अर्थों में उड़ने वाली कार का प्रमाण नहीं माना जा सकता। कुछ क्षण हवा में उछलना और नियंत्रित उड़ान भरकर यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना बिल्कुल अलग बात है। हालांकि इस घटना का महत्व फिर भी कम नहीं है। इसने एक बार फिर दिखाया कि सड़क परिवहन और एयरोस्पेस तकनीक के बीच की दूरी घटाने की महत्वाकांक्षा कितनी बड़ी हो चुकी है। मगर भविष्य की असली परीक्षा रोमांचक प्रदर्शन नहीं बल्कि सुरक्षा, उपयोगिता, लागत और नियामकीय मंजूरी होगी। साथ ही इसकी जोर-शोर से हो रही तैयारियों के बीच यह सवाल भी वाजिब है कि क्या हर कार को उड़ने की जरूरत होगी?

## वास्तविकता को समझना होगा

फ्लाइंग कार से जुड़े सवालों का जवाब समझने के लिए पहले इसकी दो अलग अवधारणाओं को समझना होगा। पहली यह कि ऐसी कार, जो सड़क पर भी चल सके और जरूरत पड़ने पर उड़ भी सके। दूसरी है इलेक्ट्रिक एयर टैक्सी, जो सड़क पर चलने वाली कार नहीं बल्कि छोटी उड़ने वाली कार या मशीन है। इसे ही आमतौर पर ईवीटीओएल कहा जाता है यानी टैक्सी के रूप में एक विमान, जो बिजली से उड़ता हो और हेलीकॉप्टर की तरह सीधे ऊपर उठ सके और नीचे उतर सकता हो।

यह दूसरी अवधारणा फिलहाल ज्यादा व्यावहारिक दिखाई देती है। शहरों के बीच हर व्यक्ति की निजी उड़ने वाली कार की तुलना में हवाई अड्डे से शहर के केंद्र तक तेज परिवहन, महानगरों में सीमित दूरी की हवाई टैक्सी और आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं पहले उपयोगी साबित हो सकती हैं। इससे जमीन पर मौजूद सड़क नेटवर्क को हटाने के बजाय उसके ऊपर एक नया परिवहन विकल्प तैयार होगा। हमें यह समझना होगा कि महानगरों में यातायात की समस्या केवल सड़कों की कमी नहीं है। आबादी का घनत्व, गलत शहरी नियोजन, पार्किंग, सार्वजनिक परिवहन की अपर्याप्तता और यात्रा की बढ़ती मांग भी इसके कारण हैं। ऐसे में उड़ती हुई कारों को हर समस्या का समाधान मानना जल्दबाजी होगी। कल्पना करें दिल्ली, मुंबई या बंगलुरु में हजारों निजी उड़ने वाली कारें एक साथ आसमान में उतर आएं, तब सवाल होगा कि उन्हें उड़ने की अनुमति कौन देगा, उनके लिए हवाई गलियारे कैसे निर्धारित होंगे, दुर्घटना की स्थिति में जिम्मेदारी किसकी होगी और वे कहां उतरेंगी? यदि हर इमारत की छत पर लैंडिंग की व्यवस्था करनी पड़े, तो शहरी ढांचे को पूरी तरह बदलना होगा। इसके अलावा, बैटरी की क्षमता, उड़ान की दूरी, मौसम का प्रभाव, शोर, रखरखाव और यात्रियों की सुरक्षा भी बड़ी चुनौतियां हैं। कम दूरी की इलेक्ट्रिक उड़ान संभव बनाने वाली तकनीक अपने आप में यह गारंटी नहीं देती कि वह हर मौसम में सुरक्षित और किफायती सेवा दे सकेगी।



अमरिका में बनी जॉबी एविएशन का एस4

## खत्म नहीं होंगे पारंपरिक वाहन

उड़न कारों के बारे में सोचते हुए एक यह सवाल भी जेहन में आता है कि क्या उड़ने वाली कारों के आने के बाद रेल, मेट्रो, बसें और सामान्य कारें अप्रासंगिक हो जाएंगी? इसकी संभावना बिल्कुल नहीं है, क्योंकि इतिहास गवाह है कि परिवहन के इतिहास में नए साधन पुराने साधनों को पूरी तरह समाप्त नहीं करते बल्कि उनकी भूमिका बदलते हैं। विमान आने के बाद रेल खत्म नहीं हुई, मेट्रो के विस्तार से बसों की जरूरत समाप्त नहीं हुई। उसी तरह उड़ने वाली कारें भी पहले उन यात्राओं में जगह बना सकती हैं, जहां समय की कीमत अधिक है और यात्रियों की संख्या सीमित है। मेट्रो और रेल बड़ी संख्या में यात्रियों को कम ऊर्जा और कम जगह में ले जाने में सक्षम हैं। बसें स्थानीय संपर्क प्रदान करती हैं, जबकि निजी कारें घर से गंतव्य तक लचीली यात्रा का विकल्प देती हैं।

## भविष्य में ऐसा हो सकता है

एक यात्री घर से इलेक्ट्रिक कार में मेट्रो स्टेशन तक पहुंचे, लंबी दूरी ट्रेन से तय करें और अंतिम चरण में हवाई टैक्सी का इस्तेमाल करे, ऐसी एकीकृत व्यवस्था अधिक यथार्थवादी है। इस तरह उड़ती हुई कारों का भविष्य केवल इस बात से तय नहीं होगा कि कोई वाहन हवा में उठ सकता है या नहीं। असली प्रश्न यह होगा कि क्या वह आम आदमी की जरूरतों के अनुकूल सुरक्षित, विश्वसनीय, किफायती और पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर विकल्प बन सकता है। हालांकि, उस भविष्य में सबसे महत्वपूर्ण वाहन शायद वह नहीं होगा जो सबसे ऊंचा उड़ता है बल्कि वह होगा जो लोगों को सबसे सुरक्षित, सुलभ और कम खर्च में उनकी मंजिल तक पहुंचाता है। *



### कई देशों में हो रहे प्रयास

**भले आज** अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन और नीदरलैंड सहित कई देशों में अलग-अलग तरह के उड़ने वाले वाहन विकसित हो रहे हों। अमेरिका में जॉबी एविएशन का एस4 और आर्चर एविएशन का मिडनाइट जैसे विमान हवाई टैक्सी के लिए तैयार किए जा रहे हैं। चीन की ईहैंग अपने ईएच216-एस जैसे बिना पायलट वाले यात्री विमान के कारण उल्लेखनीय बढ़त रखती है। जापान की स्काईड्राइव और चीन की एक्सपेंग एरॉएचटी सड़क और आसमान के बीच संबंध बनाने वाली अलग अवधारणाओं पर काम कर रही हैं। मगर यहां एक महत्वपूर्ण अंतर है। तकनीकी प्रोटोटाइप उड़ाना, विमान का नियामकीय प्रमाणन प्राप्त करना और नियमित व्यावसायिक यात्री सेवा शुरू करना तीन अलग-अलग पड़ाव हैं। चीन का ईएच216-एस प्रमाणन और सीमित सेवाओं के मामले में आगे है, जबकि अमेरिका में जॉबी जैसे खिलाड़ी पायलट वाले विमानों के प्रमाणन की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए किसी एक देश को सभी तरह की उड़ने वाली कारों का निर्विवाद विजेता कहना अभी सही नहीं होगा।

# अब रोबोट करेंगे सर्जरी !

अभी तक इंसानी डॉक्टर की मदद से रोबोटिक सर्जरी हुआ करती थी। लेकिन अब इंसानी डॉक्टर से दूर रहकर रोबोटिक सर्जरी को अंजाम देने की दिशा में कदम आगे बढ़ गए हैं। यह देखना दिलचस्प होगा, आने वाले समय में मेडिकल साइंस में रोबोट की भूमिका और कितनी बढ़ती है?



{ टेक्नोट्रीटमेंट / वीरेंद्र बहादुर सिंह }

मेडिकल क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और रोबोटिक्स का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। आज भारत में भी घुटने और कूल्हे के जॉइंट रिप्लेसमेंट से लेकर कई तरह की छोटी-बड़ी सर्जरी रोबोटिक तकनीक की मदद से की जाने लगी हैं। हालांकि इन ऑपरेशनों में रोबोट अपने आप सर्जरी नहीं करता। अनुभवी और कुशल डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रहते हैं और रोबोटिक उपकरणों की मदद से पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं। लेकिन अमेरिका में हाल ही में हुए एक प्रयोग ने भविष्य की मेडिकल सर्जरी की संभावनाओं को एक कदम और आगे बढ़ा दिया है।

**दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने की सर्जरी:** अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में एक ऐसा प्रयोग किया गया, जिसमें दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने एक जीवित मरीज पर सर्जरी की। इस दौरान गॉल-ब्लैडर यानी पित्ताशय को शरीर से अलग किया गया। ऑपरेशन में चीरा लगाना, लिवर से पित्ताशय को अलग करना और अंत में टांके लगाने जैसी प्रक्रियाएं रोबोट ने पूरी कीं।

यह दावा सुनने में बेहद रोमांचक है कि रोबोट ने स्वयं ऑपरेशन कर दिया, लेकिन इस प्रयोग की वास्तविकता को समझना जरूरी है। पहली बात यह कि मरीज इंसान नहीं, बल्कि एक पशु था। दूसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि प्रशिक्षित मानव डॉक्टर पूरी प्रक्रिया के दौरान मौजूद थे। वे ऑपरेशन थिएटर से दूर बैठकर टेली ऑपरेशन तकनीक के माध्यम से रोबोट को नियंत्रित कर रहे थे। फिर भी मेडिकल साइंस के लिए यह प्रयोग बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या भविष्य में ह्यूमनॉइड रोबोट डॉक्टर की प्रत्यक्ष मौजूदगी के बिना भी जटिल सर्जरी कर सकते हैं?

**नॉर्मल रोबोट ने किया ऑपरेशन:** इस प्रयोग की एक और खासियत थी। इसके लिए कोई विशेष सर्जिकल रोबोट तैयार नहीं किया गया था। इसके बजाय दो नॉर्मल ह्यूमनॉइड रोबोट का इस्तेमाल किया गया। इन रोबोट में कई तरह के जोड़ थे और उनके हाथों में अंगूठे तथा अंगुलियों जैसी कार्यक्षमता थी। इसलिए वे अपने हाथों में अलग-अलग सर्जिकल उपकरण पकड़कर उनका इस्तेमाल कर सकते थे। इनमें श्रीडी लाइडार और डेप्थ कैमरा जैसी तकनीक भी लगी थी। इससे रोबोट अपने सामने मौजूद वस्तुओं की स्थिति और गहराई को समझ सकते थे। यही क्षमता सर्जरी जैसे अत्यंत संवेदनशील काम में महत्वपूर्ण हो जाती है। यह प्रयोग इस बात का संकेत है कि भविष्य की सर्जरी में केवल रोबोटिक मशीनें ही नहीं, बल्कि एआई, कंप्यूटर विजन और रोबोटिक्स का संयुक्त इस्तेमाल निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

**भारत में हो चुका है ऐसा प्रयोग:** रोबोटिक सर्जरी की यह कहानी भारत के लिए पूरी तरह नई नहीं है। करीब आठ वर्ष पहले गुजरात में ऐसा प्रयोग हो चुका है, जिसमें डॉक्टर ने मरीज से कई किलोमीटर दूर बैठकर टेलीरोबोटिक तकनीक से सफलतापूर्वक हृदय की सर्जिकल प्रक्रिया की थी।

पद्मश्री से सम्मानित हृदय रोग विशेषज्ञ डा. तेजस पटेल ने 2018 में अहमदाबाद स्थित अस्पताल में भर्ती एक महिला मरीज के हृदय की प्रक्रिया को दूर बैठकर नियंत्रित किया था। उस समय डॉक्टर स्वयं अस्पताल से लगभग 30-32 किलोमीटर दूर गांधीनगर में थे। मरीज को कुछ दिन पहले ही हृदयाघात हुआ था। इसके बावजूद उसने दुनिया में इस तरह की पहली प्रक्रियाओं में से एक के लिए सहमति दी। यह प्रयोग इसलिए ऐतिहासिक था क्योंकि डॉक्टर और मरीज के बीच कई किलोमीटर की दूरी होने के बावजूद रोबोटिक सिस्टम और हाईस्पीड इंटरनेट की मदद से डॉक्टर मरीज की प्रक्रिया को नियंत्रित कर सके।



**कैसे होती है टेलीरोबोटिक सर्जरी:** इस तरह की रोबोटिक प्रणाली मुख्य रूप से तीन हिस्सों में काम करती है। पहला हिस्सा अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रोबोटिक आर्म होता है, जो कैथलैब जैसी व्यवस्था के साथ जुड़ा रहता है और मरीज के शरीर में वास्तविक प्रक्रिया करता है। दूसरे हिस्से में एक बदली जा सकने वाली कैसेट होती है। इसमें प्रक्रिया के लिए जरूरी क्लिनिकल सामग्री और उपकरण व्यवस्थित रहते हैं। तीसरा हिस्सा डॉक्टर के लिए बनी कॉकपिट जैसी व्यवस्था होती है। डॉक्टर इसमें बैठकर गेमिंग के जॉयस्टिक जैसे नियंत्रण उपकरणों की मदद से रोबोटिक आर्म को संचालित करता है।

सबसे खास बात यह है कि यह कॉकपिट, ऑपरेशन थिएटर से काफी दूर भी हो सकती है।

**सवाल भी है बरकरार:** रोबोटिक सर्जरी को लेकर अकसर यह सवाल उठता है कि क्या भविष्य में रोबोट, डॉक्टरों की जगह ले लेंगे? फिलहाल ऐसा कहना जल्दबाजी होगी। सर्जरी केवल हाथों की सटीक गतिविधियों का नाम नहीं है। मरीज की स्थिति को समझना, अचानक पैदा होने वाली जटिलताओं का आकलन करना, निर्णय लेना और किसी अप्रत्याशित परिस्थिति में तुरंत रणनीति बदलना, इन सबमें मानवीय विशेषज्ञता महत्वपूर्ण है।

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी उतना ही दिलचस्प है। अगर एआई रोबोट को देखने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता में लगातार बेहतर बनाता है और रोबोटिक तकनीक हाथों की अत्यंत सूक्ष्म गतिविधियों को अधिक सटीक बनाती है, तो डॉक्टर और रोबोट का यह गठजोड़ चिकित्सा क्षेत्र को पूरी तरह बदल सकता है। *



{ दोहे / केदार शर्मा }

## पूर्ण चंद्रमा शरद का

दीप्त रजत-सी ओढ़नी, उजली पाखी रात।
पूर्ण चंद्र से शरद ऋतु, हंस-हंस करती बात।।
चटक चमक चक चांदनी, चंचल चित चकोर।
होले-होले हवा हंस, हुलराती हर ओर।।
षोडस अंशों युक्त है, मादकमय मुस्कान।
सम्मोहनमय मौन में, डूबा सकल जहान।।
कानन उपवन दमकते, नहा चांदनी संग।
नदी सरोवर बदलते, धवल वसन सम रंग।।
क्षीरसिंधु सुत क्षीर-सा, शीतलता सब ओर।
मंद-मंद मुस्कान में, मिला मधुर मन-मोर।।
पूर्ण चंद्रमा शरद का, बदले सब हालात।
कुदरत जैसे बांटती, कोई नई सौगात।।
पर्वों की आहट हुई, सर्दी की पदचाप।
उधर गुलाबी ठंड भी, बदन रही है नाप।।
बदली-बदली सी फिजां, बदल रहे हालात।
दिन की घड़ियां भी घटीं, और फैलती रात।।



{ पुस्तक अंश / सूर्यबाला }

कई प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यबाला की आत्मकथात्मक संस्मरणों की पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' हाल में प्रकाशित होकर आई है। अपनी स्मृति की वीथियों से गुजरते हुए उन्होंने बहुत साधारण सी लगने वाली घटनाओं में व्याप्त असाधारण सौंदर्य और विमर्श को व्यक्त किया है। आज उनके जन्मदिन के अवसर पर प्रस्तुत है, इसी पुस्तक का एक संपादित अंश।

## युवती वधुओं से एक गुहार

मनोविज्ञान कभी मेरा विषय नहीं रहा लेकिन मेरी 'मेरा विद्रोह', 'सुनंदा छोकरी की डायरी', 'सांझवाती' और 'निर्वासित' जैसी कहानियां पढ़कर लोग अकसर प्रश्न करते हैं, 'आप बच्चों और बूढ़ों के मनों को कैसे इतनी बारीकी से पढ़ पाती हैं?...तो मैं ही नहीं शायद हर रचनाकार जन्मजात मनोविज्ञानी होता है। यह मनोविज्ञान लेखन ही नहीं, जीवन में भी आई परिस्थितियों और चरित्रों से निर्वाह कर ले जाने की तरकीबें निकाल सकता है। मैंने इसी की मदद से श्वसुरालय के ग्राम्यांचल से जुड़े लोगों की मन, प्रकृति और समझ बांच ली थी। ये बेशक पुरानी और रीति-रिवाजों की लकीर पीटने वाले गलत परंपराओं, अंधविश्वासों को भी सही समझने वाले लोग हैं लेकिन मन के कुटिल नहीं। ये ऊपर से अड़ियल हैं, रूढ़ परंपराओं से अलग होने का उनमें भय व्यापता हैं, और वे असुरक्षित महसूस करते हैं लेकिन अंदर से सीधे, भोले और अपनेपन की अकूत मिल्कियत के मालिक हैं। उन्होंने जीवन में सदा अपना-पराया, तेरा-मेरा अलगा-गुजारी और थोड़ी-थोड़ी चीजों पर लड़ना, अड़ना ही देखा होता है। एक-दूसरे के खिलाफ अपने पतियों को भड़काती स्त्रियां, प्रायः हर विवाहित पुत्र, रात-दिन मां से पत्नी के विरुद्ध और पत्नी से उसकी मां के खिलाफ शिकायतों की अनवरत और अंधाधुंध कलह कोलाहल भरी शिकायतें सुनते-सुनते खब्त हो गया होता है। मुझे लेकर भी इस मां की, इस परिवार की कुछ वैसी ही रूढ़ धारणाएं बनी होंगी उसे संभालने में, उनकी धारणा बदलने में समय तो लगना ही था।

विश्व की प्रकृति प्रदत्त दुर्भाग्यपूर्ण विडंबनाओं में एक है, सास-बहू की परस्पर तनातनी वास्तव में यह एक ही 'पुरुष' पर अपना एकनिष्ठ वर्चस्व चाहने वाली उसके जीवन की दो अतिप्रिय स्त्रियों के क्लेश हैं क्योंकि वह दोनों का प्रिय है दोनों स्त्रियां उस पर अपना पूरा आधिपत्य चाहती हैं। पहली ने जिस बच्चे को जन्म दिया, शिशुपन से उसके सारे दुःख-सुख की साक्षी रही, एक ही रात में उस मां को एक-दूसरी युवती स्त्री द्वारा उसके पद से अपदस्थ कर दिया जाता है। (अनजाने ही सही) लेकिन बचपन से युवा होने तक जिसकी नींद सोयी, जिसकी नींद उठी, ऐसी मां और बेटे के निकटतम रक्त-संबंध के बावजूद, यह अपदस्थ मां, अपने 'दोनों बच्चों' (पुत्र-पुत्रवधु) से एक समझदार, सम्मानजनक व्यवहार, रिश्ता और निश्छल प्यार पा कर अति प्रसन्न और तृप्त भी हो सकती है, यह कोई युवती बहू शायद ही समझती हो। कम से कम प्रयोग के तौर पर ही, नाममात्र को ही, यदि वह पहले की तरह उस मां को घर की सम्राज्ञी, उसके बेटे की 'वही मां' बनी रहने का 'भरम' बनाये रख सके तो सीधे-सीधे सिर्फ भारत ही नहीं, विश्व की एक बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्या छूमंतर हो सकती है। लेकिन इतना तक भी धैर्य कहां हो पाता है। न हमारी युवती वधुओं में! न परिपक्ववय वाली मां में ही प्रायः खलनायिकत्व अपनाने से बाज न आती वधुरानी को भी सीधे-सीधे, संपूर्ण प्रभुत्व, पर्याप्त स्पेस और स्वछंद स्वतंत्रता चाहिए होती है। तो लुटी-पिटी, हारी-खिसियानी हजार पूर्वाग्रहों से ग्रस्त, मां जो तमाम गलत धारणाओं की शिकार पहले से ही होती हैं, उनकी धारणा का रंग पक्का होता जाता है। मैंने इन्हीं दो गहरी खाइयों के बीच सेतुबंध का एक प्रयोग सा किया था जो सफल रहा और पूरे कुटुंब में तीन पीढ़ियों तक जीवन और संबंधों की समरसता कायम रही। सच तो यह है कि परिवार और रिश्तों से जुड़ी स्थितियों को सिर्फ 'घरेलू' मानकर न मुंह बिचकाया जा सकता है, न उन्हें टरकाया जा सकता है। थोड़े-बहुत उलटफेर के साथ कॉर्पोरेट और कारोबारी संस्थानों में जटिल रिलेशनशिप को साधने में काम आने वाली तरकीबों और फॉर्मूलों से ही इस मसले को भी हल किया जा सकता है। शर्त सिर्फ एक, इसे घरेलू समझ कर हल्के से न लिया जाए। *



(वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' से साभार)

विज्ञापन...

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

नोट : वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष के ऊपर) का उपचार मात्र 12 हजार रुपए में

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार ग्वालियर में हो रहा है इस तकनीक के असाधारण लाभ-

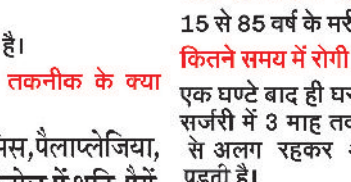

केन्द्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी से स्पाइन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए डॉ. प्रमोद पहारिया अवार्ड प्राप्त करते हुए।

स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?

यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के बाद पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एंव बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लाट फैलियर जैसे कॉम्पिलकेशन इसमें नही है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

NBC@

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली

ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466



## चित्तौड़गढ़ मीरा महोत्सव-2026

# शौर्य की फिजा में महकती भक्ति

इतिहास में राजपूताना वीरगाथाओं से समृद्ध प्रदेश राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में आज और कल आयोजित हो रहे मीरा महोत्सव में भक्ति की बयार की अनुभूति आप कर सकते हैं। यह महोत्सव न केवल राजस्थान के इतिहास बल्कि वहां की कला, संगीत, संस्कृति से रूबरू होने का अवसर भी प्रदान करती है। इस महोत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

सांस्कृतिक आयोजन
वीना गौतम

कुछ जगहें ऐसी होती हैं, जहां घूमने का अर्थ केवल खूबसूरत इमारतों को देखना, तस्वीरें खींचना और रास्ते में स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेना भर नहीं होता। वहां की मिट्टी, हवा और पत्थर भी कोई कहानी सुनाते हैं। राजस्थान का चित्तौड़गढ़ ऐसी ही जगह है। यहां दुर्ग की ऊंची प्राचीरें शौर्य और बलिदान की गाथाएं कहती हैं, विजय स्तंभ इतिहास की विराटता का अहसास कराता है और इन्हीं ऐतिहासिक दीवारों के बीच स्थित मीरा मंदिर प्रेम, समर्पण और आत्मिक स्वतंत्रता की एक बिल्कुल अलग दुनिया में ले जाता है। आज 25 और कल 26 अक्टूबर 2026 को आयोजित हो रहा मीरा महोत्सव ऐसा ही एक खास अवसर है।

**संगीत-परंपरा की अनुभूति :** राजस्थान पर्यटन के अनुसार इस दो दिवसीय आयोजन में मीरा की भक्ति, कविता, संगीत और राजस्थान की लोकपरंपराओं को केंद्र में रखा जाएगा। ऐसे में यह सफर केवल एक ऐतिहासिक शहर की सैर नहीं बल्कि उस प्रेम स्वरूपा महाभक्त मीरा को समझने का अवसर भी है, जिसने राजमहलों की मर्यादाओं के बीच अपने मन की स्वतंत्रता और कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को चुना।

**बहती है मीरा की भक्ति धारा:** चित्तौड़गढ़ का नाम आते ही रानी पद्मिनी, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा और राजपूताना के शौर्य की स्मृतियां सामने आ जाती हैं। लेकिन इस शहर की सांस्कृतिक पहचान का एक दूसरा पक्ष भी है, जो तलवार की चमक से नहीं, वीणा की धुन और भक्ति के स्वर से उजागर होता है। मीरा इसी पक्ष की प्रतिनिधि हैं। सोलहवीं सदी की भक्त-कवयित्री मीराबाई का जीवन कृष्ण के प्रति उनकी अनन्य आस्था और सामाजिक रूढ़ियों से टकराने के लिए याद किया जाता है। उनके पदों में प्रेम है, विरह है, प्रतीक्षा है और अपने आराध्य के प्रति ऐसा समर्पण है, जो किसी एक काल या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। उनकी कविता मंदिरों से निकलकर लोकगीतों, शास्त्रीय संगीत, भजन मंडलियों और आम लोगों की स्मृतियों में पहुंची। मीरा महोत्सव के दौरान भक्ति संगीत, काव्य और लोककलाओं के कार्यक्रम इस विरासत को नए सिरे से महसूस करने का अवसर देंगे।



पद्मिनी महल से गौमुख कुंड

**ऐतिहासिक मीरा दुर्ग का दीदार:** चित्तौड़गढ़ की यात्रा का सबसे प्रभावशाली पड़ाव है इसका विशाल दुर्ग। लगभग 180 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित यह ऐतिहासिक परिसर दूर से ही अपने विस्तार और भव्यता से आकर्षित करता है। इसकी लंबी चढ़ाई, प्रवेशद्वार और भीतर फैले स्मारक, आगंतुकों को धीरे-धीरे उस दौर में ले जाते हैं, जब मेवाड़ की राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान इसी दुर्ग से आकार लेती थी। इसकी प्राचीरों पर खड़े होकर आस-पास के भू-भाग को देखना अपने आपमें एक अनुभव है। यहां इतिहास किसी बंद संग्रहालय में रखी वस्तु की तरह नहीं बल्कि खुले आकाश के नीचे फैले परिदृश्य की तरह सामने आता है। समय ने कई इमारतों को क्षतिग्रस्त किया, लेकिन उनके अवशेष आज भी सत्ता, संघर्ष, कला और स्मृति की परतें खोलते हैं। विजय स्तंभ इसकी पहचान का प्रमुख हिस्सा है। इसकी बारीकियों को देखते हुए समझ आता है कि मध्यकालीन भारत में स्मारक केवल विजय का प्रतीक नहीं बल्कि शिल्पकला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम भी थे।

**आकर्षक मीरा मंदिर:** इसी दुर्ग के भीतर मीरा मंदिर पहुंचकर यात्रा का स्वर बदल जाता है। यहां राजसी वैभव और युद्धों की



मीरा मंदिर

स्मृतियों के बीच भक्ति की एक शांत दुनिया दिखाई देती है। मंदिर की स्थापत्य शैली, नक्काशी और परिसर का वातावरण पर्यटकों को कुछ देर ठहरने के लिए बाध्य करता है। यहां पहुंचकर मीरा के पदों को याद करना इस यात्रा को और अर्थपूर्ण बना सकता है। उनके काव्य में कृष्ण केवल आराध्य नहीं, बल्कि आत्मीय संवाद के साथी हैं। मीरा का प्रेम किसी सांसारिक उपलब्धि की आकांक्षा नहीं रखता, वह अपने विश्वास के साथ जीने की स्वतंत्रता का भी प्रतीक है। यही कारण है कि सदियों बाद भी उनकी कविता अलग-अलग भाषाओं और पीढ़ियों के लोगों को छूती है। मीरा मंदिर में कुछ समय शांत बैठकर आसपास के स्थापत्य को देखकर कल्पना कर सकते हैं कि कैसे किसी कवयित्री की निजी अनुभूति धीरे-धीरे सामूहिक सांस्कृतिक विरासत बन जाती है। पर्यटन का असली आनंद शायद इसी बिंदु पर मिलता है, जब कोई जगह केवल देखने की वस्तु नहीं रहती, बल्कि भीतर कुछ बदलने का अवसर बन जाती है।

**ये स्थल भी हैं दर्शनीय:** जब आप मीरा महोत्सव में शामिल होने के लिए चित्तौड़गढ़ जाएं तो यहां स्थित कई और स्थलों को देख सकते हैं। रानी पद्मिनी का महल, राणा कुंभा का महल, गौमुख कुंड और कालिका माता मंदिर जैसे स्थल, इतिहास तथा स्थापत्य के अलग-अलग रूप सामने लाते हैं। पद्मिनी महल का परिसर और उसके आस-पास का जलाशय दुर्ग के दृश्यात्मक आकर्षण को बढ़ाते हैं, जबकि राणा कुंभा का महल, मेवाड़ की राजसी विरासत को समझने का अवसर देता है। गौमुख कुंड पर पहुंचकर कुछ देर ठहरना अविस्मरणीय अनुभव हो सकता है। चट्टान से निकलकर कुंड में पहुंचते जलस्रोत का दृश्य प्रकृति और आस्था के पुराने संबंध की याद दिलाता है। दुर्ग के भीतर जैन मंदिर भी हैं, जिनकी बारीक नक्काशी और स्थापत्य विविधता इस क्षेत्र की बहुधार्मिक सांस्कृतिक विरासत का परिचय देती है। *

### इसे भी करें एंज्वॉय

चित्तौड़गढ़ की यात्रा में राजस्थानी खान-पान का स्वाद भी शामिल होना चाहिए। दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी और स्थानीय शैली में तैयार पारंपरिक व्यंजन भोजन को यात्रा का यादगार हिस्सा बना सकते हैं। स्थानीय बाजारों में हस्तशिल्प, पारंपरिक कपड़े और क्षेत्रीय कलाकृतियां देखी, खरीदी जा सकती हैं।

बेहतर और सफल जीवन जीने के लिए सबको बदलने के बजाय खुद को समझिए और जरूरी बदलाव कीजिए। इससे आप मनचाही सफलता तो पाएंगे ही, जीवन में सार्थकता भी आएगी।

# दुनिया को नहीं खुद को बदलिए

सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन



अधिकतर लोग अकसर इसलिए परेशान रहते हैं कि ये दुनिया वैसी क्यों नहीं है, जैसी वे चाहते हैं? सच कहा जाए तो उनकी परेशानी का मूल ही यही सोच है। सुकून, समृद्धि और सफलता के लिए असल में जरूरत होती है खुद को बदलने की।

**व्यर्थ न करें मानसिक ऊर्जा:** दूसरों को बदलने की कोशिश में अपनी ऊर्जा बर्बाद मत कीजिए। हमारे तनाव का बड़ा हिस्सा अकसर उन चीजों से आता है, जो हमारे नियंत्रण में हैं ही नहीं। कोई हमारे बारे में क्या सोचता है, किसने हमें फोन नहीं किया, किसी ने हमारी बात क्यों नहीं मानी या किसी ने हमारे साथ वैसा व्यवहार क्यों नहीं किया जैसा हम चाहते थे? इन सवालों में मानसिक ऊर्जा खपती है। 'लेट देम' थ्योरी इसी प्रवृत्ति से बाहर निकलने का एक सरल तरीका है। किसी के व्यवहार से परेशान हों तो तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय खुद से पूछें, 'क्या यह मेरे नियंत्रण में है?' यदि जवाब 'नहीं' है तो अपनी ऊर्जा बचाइए।

**समझें समय का सही उपयोग:** समय बचाने से पहले यह तय कीजिए कि समय किसके लिए चाहिए? आज समय प्रबंधन पर हजारों तकनीकें उपलब्ध हैं, लेकिन हमारी टू-डू लिस्ट फिर भी खत्म नहीं होती। याद रखिए, हमारे पास हर काम करने के लिए अनंत समय नहीं है, इसलिए हर अवसर स्वीकार करना और हर काम पूरा करना संभव नहीं। इसका सीधा अर्थ है, प्राथमिकताएं तय करनी होंगी। जिस काम के लिए समय नहीं है, उसे 'नहीं' कहना भी समय प्रबंधन है।



**लोगों की परवाह छोड़िए:** 'लोग क्या कहेंगे' जैसे डायलॉग को जिंदगी का कंट्रोलर मत बनने दीजिए। समाज की राय जरूरी हो सकती है, लेकिन यदि हर निर्णय इसी डर से लिया जाए कि दूसरे क्या सोचेंगे तो धीरे-धीरे अपनी पसंद, पहचान और इच्छा दबने लगती है। आपका काम, आदतें, स्वभाव हर व्यक्ति को पसंद आना संभव भी नहीं, जरूरी भी नहीं। यदि हर टिप्पणी आपके फैसले बदलने लगे तो जीवन आपका होकर भी आपका नहीं रहेगा। दूसरों का सम्मान कीजिए, पर अपनी जिंदगी का नियंत्रण उनके हाथ में मत दीजिए।

**दिमाग पर हावी न हो मोबाइल:** आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जो उपकरण हमें दुनिया से जोड़ने के लिए बना था, वही हमारा ध्यान सबसे ज्यादा भंग कर रहा है। हर कुछ मिनट में फोन देखना, रील बदलना, नोटिफिकेशन जांचना और बिना उद्देश्य स्क्रॉल करना एक आदत सी बन गई है। समाधान तकनीक को त्यागना नहीं, बल्कि उसकी सीमा तय करना है। सुबह उठते ही फोन न देखना, भोजन के समय उसे दूर रखना और सोने से पहले कुछ समय स्क्रीन-मुक्त रखना छोटे लेकिन प्रभावी कदम हो सकते हैं। डिजिटल अनुशासन आज की नई जीवनशैली का अनिवार्य हिस्सा है।

**रिश्तों में बातचीत जरूरी:** हमारी कई पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्याएं वास्तविक घटना से ज्यादा उसके बारे में बनाए गए अनुमान से पैदा होती हैं। किसी ने देर से जवाब दिया तो हमने मान लिया कि वह नाराज है। किसी ने कम बात की तो मान लिया कि रिश्ता खराब हो गया। इसके बजाय सीधे संवाद करना बेहतर है। आरोप लगाने के बजाय सवाल पूछिए, प्रतिक्रिया देने से पहले सामने वाले की बात सुनिए। रिश्तों में हर बात पर सहमत होना जरूरी नहीं, लेकिन असहमति के बीच सम्मान बचा रहना जरूरी है। अच्छा रिश्ता वह नहीं, जिसमें कभी झगड़ा न हो, अच्छा रिश्ता वह है, जिसमें झगड़े के बाद बातचीत का दरवाजा बंद न हो।

**मुझसे नहीं होगा सोचना ठीक नहीं:** कई क्षमताएं अभ्यास और सीखने से विकसित हो सकती हैं। उम्र, पिछली असफलता या पुरानी पहचान को भविष्य की अंतिम सीमा मान लेना जरूरी नहीं। जिसने कभी मंच पर भाषण नहीं दिया, वह अभ्यास से वक्ता बन सकता है। जिसने कभी नहीं लिखा, वह लिखना सीख सकता है। जिसने तकनीक से दूरी बनाई है, वह धीरे-धीरे डिजिटल कौशल हासिल कर सकता है।

**व्यस्त नहीं एकाग्र रहें:** एक साथ कई काम करने की हमारी आदत वास्तव में कई बार सारे कामों की गुणवत्ता कम कर देती है। लगातार आने वाले संदेश, ई-मेल और नोटिफिकेशन दिमाग को एक काम से दूसरे काम की ओर खींचते रहते हैं। इसलिए रोज कुछ समय एक महत्वपूर्ण काम के लिए बिना व्यवधान के निर्धारित करना उपयोगी है। तीस मिनट के कंसंट्रेशन टास्क से शुरुआत कीजिए। मोबाइल दूर रखिए, अनावश्यक नोटिफिकेशन बंद कीजिए। *

प्रिकॉशन
शैलेंद्र सिंह

इन दिनों यंगस्टर्स में ईयरफोन से म्यूजिक सुनने की हैबिट बहुत तेजी से बढ़ रही है। लेकिन असावधानी बरतने पर इससे सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। विश्व श्रवण दिवस (27 अक्टूबर) पर जानिए उपयोगी बातें।

# हार्मफुल हो सकती है ईयरफोन की दीवानगी





बस-मेट्रो में सफर करता युवा, अपनी गाड़ी में बैठकर ऑफिस जा रहा प्रोफेशनल हो, सड़क पर पैदल चलता किशोर, जिम में पसीना बहाता यंगस्टर या रात को बिस्तर पर लेटा विद्यार्थी, इन सबके बीच इन दिनों जो हैबिट तेजी से पॉपुलर हुई है, वह है- कानों में ईयरफोन लगाए रहना। म्यूजिक, पॉडकॉस्ट, वीडियो और ऑनलाइन बातचीत की दुनिया अब इतनी निजी हो गई है कि आस-पास की आवाजें कई बार हमारे लिए गैर जरूरी हो जाती हैं। लेकिन इस निजी दुनिया का एक खतरा भी है। जिस पर हम अकसर तब तक ध्यान नहीं देते, जब तक सुनाई देने वाली आवाजें धीमी नहीं पड़ने लगतीं।

**विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी:** डब्ल्यूएचओ के मुताबिक दुनिया भर में 12 से 35 वर्ष के 1 अरब से ज्यादा युवाओं को मनोरंजन के दौरान तेज आवाज के असुरक्षित संपर्क के कारण सुनने की क्षमता प्रभावित होने का खतरा रहता है। इसमें व्यक्तिगत ऑडियो, उपकरणों पर तेज आवाज में संगीत सुनना और मनोरंजन स्थलों पर अधिक शोर शामिल है।

**स्मार्टफोन और म्यूजिक:** पहले संगीत सुनने के लिए हम रेडियो, टेप रिकॉर्डर या म्यूजिक सिस्टम का सहारा लेते थे। लेकिन अब कुछ सेकेंड में ही हम अपने मनपसंद गाने सुन सकते हैं। यह सुविधा उपलब्ध कराई है, हमारी जेब में मौजूद रहने वाले स्मार्टफोन ने। यात्रा के दौरान, पढ़ाई करते समय, व्यायाम के वक्त और कई बार सोने से पहले तक हमारे विशेषकर युवाओं के कानों में ईयरफोन लगे रहते हैं। जिन कोशिकाओं की मदद से ध्वनि के संकेत हमारे मस्तिष्क तक पहुंचते हैं, वे कोशिकाएं लगातार डिजिटल संगीत के संपर्क में रहने के कारण क्षतिग्रस्त होने लगती है। इससे सुनने की क्षमता प्रभावित होने लगती है।

**खतरा केवल तीव्रता में नहीं:** जोखिम तय करने में तीन बातें अहम है- आवाज कितनी तेज है, वह कितनी देर तक सुनी जा रही है और ऐसा कितनी बार होता है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक श्रवण संबंधी सुरक्षित दिशा-निर्देशों के तहत औसतन 80 डेसिबल की ध्वनि के संपर्क में एक सप्ताह में 40 घंटे तक रहने से वयस्कों के लिए संदर्भित सुरक्षित सीमा मानी जाती है। यदि आवाज का स्तर 90 डेसिबल हो जाए, तो यह अवधि घटकर सप्ताह में केवल 4 घंटे रह जाती है। इसका मतलब है कि यांत्रिक आवाज थोड़ी भी बढ़ जाए तो कान की सुरक्षा प्रणाली असुरक्षित हो जाती है।

**संगीत सुनिए लेकिन:** संगीत जरूर सुनिए, लेकिन संगीत हमेशा सुनने की शक्ति बचाकर सुनिए। आवाज कम रखिए, चार-चार घंटे तक लगातार संगीत ही नहीं किसी भी वॉयस को सुनने से बचिए। हर आधे या एक घंटे बाद कानों को आराम दीजिए। आखिरकार संगीत जिंदगी को खूबसूरत बनाने का जरिया है, लेकिन इससे अपनी जिंदगी में सुनने की शक्ति को खत्म करके बदसूरत न बनाएं। *



'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां' गीत दृश्य



फिल्म 'बागबान' का इमोशनल सीन



'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा' गीत दृश्य

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश

हिंदी फिल्मों में दांपत्य प्रेम को अलग-अलग तरह से प्रस्तुत किया जाता रहा है। कई ऐसे गीत रचे गए हैं, जो आज भी करवा चौथ जैसे पर्व पर जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों और दांपत्य प्रेम पर केंद्रित गीतों पर एक नजर।

# फिल्मी गीतों में खूब दमकता रहा है दांपत्य प्रेम

पारिवारिक, धार्मिक ही नहीं हर तरह की हिंदी फिल्मों में पति-पत्नी के रिश्ते को बहुत महत्व दिया जाता रहा है। खासतौर पर दांपत्य जीवन खुशहाल बनाने के लिए पत्नी के द्वारा किए जाने वाले त्याग और समर्पण को भी फिल्मों में अलग-अलग नजरिए से फिल्माया जाता रहा है। पत्नी के द्वारा अपने सुहाग यानी पति के लिए व्रत की बात आती है तो बॉलीवुड में इस पर भी केंद्रित कुछ फिल्मी दृश्य और एक से बढ़कर सुंदर गीत रचे गए हैं।

**यादगार हैं ये गीत:** पति-पत्नी के प्रेम को समर्पित करवा चौथ के गीतों की बात करें तो 65 वर्ष पहले बनी फिल्म 'बहू-बेटी' का एक गीत सबसे पहले याद आता है। माला सिन्हा, अशोक कुमार, जॉय मुखर्जी और मुमताज स्टारर इस फिल्म में आशा भोंसले के गाए गीत 'आज है करवा चौथ सखी री, मांग ले सुख दान' को आज भी याद किया जाता है। इसमें करवा चौथ के पर्व को जिस तरह से उत्सव जैसा दिखाया गया, वह बाद की फिल्मों के लिए नजीर बना। इसके बाद भी कुछ फिल्मों में करवा चौथ से जुड़े गीत या कहानी पर आधारित दृश्यों ने पति के प्रति पत्नी के प्रेम, निष्ठा, समर्पण, त्याग और सम्मान को प्रभावी तरीके से पेश किया जाता रहा है।

वर्ष 1969 में रिलीज हुई फिल्म 'सुहागरात' का गीत 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे', भी दांपत्य प्रेम को बहुत खूबसूरती से प्रकट करता है। इसी तरह वर्ष 1973 में रिलीज हुई फिल्म 'सौदागर' में फूल बानो (पद्मा खन्ना) अपने पति मोती (अमिताभ बच्चन) के लिए जब 'सजना है मुझे सजना के लिए...' गाती हैं तो एक सजी-धजी पत्नी का चेहरा सामने आ जाता है, जो अपने पति को खुशी देने के लिए सजती-संवरती है। भले इसे करवा चौथ से सीधा जोड़ा नहीं जाए पर यह हर करवा चौथ पर उन गीतों में शामिल होता है, जो इस दिन जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं।

कुछ इसी तरह का एक गाना फिल्म 'गीत गाता चल' का है, जो 51 वर्ष पहले आई थी। 'मैं वही, दर्पण वही, न जाने ये क्या हो गया कि सब कुछ लागे नया-नया..' में सारिका-सचिन की जोड़ी एकदम से भारतीयता में रची-बसी नजर आती है। पूरी तरह लगता है कि दांपत्य प्रेम को समर्पित है यह गीत।

**ये फिल्में भी हैं यादगार:** करवा चौथ को पूरी तरह से समर्पित फिल्म 'करवा चौथ' 1978 में रामलाल हंस ने बनाई थी, जो इस पर्व के लिए पहली फिल्म मानी जाती है। आशीष कुमार, कामिनी कौशल, आद्या, पद्म चव्हाण, रमेश देव और हेलन ने इसमें अभिनय किया था। उषा मंगेशकर के गाए गीत 'करवा चौथ का व्रत ऐसा', इस मूवी का मुख्य गीत था। इसमें हेलन ने अपनी सखियों के साथ पारंपरिक तौर तरीके से करवा चौथ को सेलिब्रेट किया।



'करवाचौथ का व्रत ऐसा' गीत मे हेलन

करवा चौथ पर दांपत्य प्रेम को प्रभावी तरीके से प्रेजेंट करने वाली दो और फिल्मों का जिक्र किया जा सकता है। ये हैं- 'मांग भरो सजना' और 'सुहागरात'। सन 1980 में जब 'मांग भरो सजना' में पति का दो पत्नियों के बीच में संतुलन बनाने का प्रयास करना, उस दौर में महिलाओं के बीच सर्वाधिक चर्चा का विषय बन गया था। रेखा और मौसमी चटर्जी के किरदारों ने इसमें जीतेंद्र के लिए व्रत रखकर पूरे समर्पण के साथ इस गीत के फिल्मांकन को प्रस्तुत किया है। आशा भोसले तथा लता मंगेशकर की आवाज में गाया यह गीत, 'दीपक मेरे सुहाग का जलता रहे...' आज भी करवा चौथ के अवसर पर विवाहित महिलाएं सुनना पसंद करती हैं।

**पति के साथ को समर्पित भावुक गीत:** फिल्म 'सुहागरात' का गीत, 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे...' पत्नी का पति के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा को दिखाता है। उसका मन सूरज-चांद से भी नहीं भर रहा है तो वह पति की जिंदगानी के लिए उससे आगे निकल जाती है। उसे लगता है कि सूरज चांद तो छिप सकते हैं पर मां गंगा कभी नहीं सूखेंगी और वह उससे अपने पति का जीवन जोड़ देती है। दांपत्य प्रेम की पराकाष्ठा व्यक्त करता है यह गीत।

**ये गीत-दृश्य भी हैं दांपत्य को समर्पित:** नए दौर की फिल्मों में भी कई गीत ऐसे रचे गए, जिन्होंने दर्शकों को करवा चौथ के प्रति संवेदनशील बनाया और इस पर्व की महत्ता को नया मोड़ दिया। इनमें 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का 'घर आ जा परदेसी', 'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां', 'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा बादल में', 'जख्म' का 'गली में आज चांद निकला' के अतिरिक्त भी कई ऐसे गीत हैं, जो भले ही करवा चौथ का आधार नहीं लेते हों पर इस दिन विवाहित महिलाएं गुनगुनाती नजर आती हैं। हां, 'राजा हिंदुस्तानी' का वह सीन भी इस दिन अवश्य याद आता है, जिसमें करिश्मा कपूर अपने पति के लिए निर्जला व्रत रखती है और एक भावनात्तक मोड़ इसका एंड करता है। ठीक वैसे ही जैसे करवा चौथ पर चांद देखने के बाद पति-पत्नी एक-दूसरे को देखते हुए ऐसे लगते हैं जैसे कह रहे हों सात जन्मों का रिश्ता है हमारा। यहां फिल्म 'बागबान' का जिक्र करना भी जरूरी है। इसमें अमिताभ का किरदार, अपनी पत्नी (हेमा मालिनी) के लिए व्रत रखता है। दोनों एक-दूसरे से दूर रहकर भी दांपत्य के अटूट प्रेम बंधन में जुड़े दिखते हैं। *

पर्व / आर. सी. शर्मा

# शरद पूर्णिमा चांदनी रात में भक्ति की दिव्यता





भारतीय सनातन परंपरा में पर्व-त्योहार आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाले आध्यात्मिक सोपान भी होते हैं। इन्हीं पावन पर्वों में शरद पूर्णिमा का विशिष्ट स्थान है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व प्रकृति की अनुपम छटा, चंद्रमा की धवल चांदनी, श्रीकृष्ण की महारास लीला और मां लक्ष्मी की आराधना के कारण विशेष धार्मिक महत्व रखता है।

**महारास की दिव्य रात्रि:** शरद पूर्णिमा का सर्वाधिक भावपूर्ण आध्यात्मिक संदर्भ भगवान श्रीकृष्ण की महारास लीला से जुड़ा है। श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंद में वर्णित रासपंचाध्याई भगवान के माधुर्य स्वरूप और गोपियों की अनन्य भक्ति का अद्भुत आख्यान प्रस्तुत करती है। शरद ऋतु की निर्मल रात्रि, यमुना का तट, वृंदावन की कुंज गलियां और मुरली की मधुर तान यह समूचा परिवेश भक्ति साहित्य में दिव्यता के अनुपम बिंब के रूप में प्रतिष्ठित है। भागवत परंपरा में रासलीला को लौकिक प्रेम की सीमाओं से ऊपर उठकर ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव से देखा जाता है। महारास का आध्यात्मिक मर्म यही है कि जब अहंकार, स्वार्थ और सांसारिक आसक्ति का आवरण हटता है, तब हृदय में अनन्य भक्ति का प्रकाश प्रकट होता है। इस दृष्टि से शरद पूर्णिमा केवल चंद्रदर्शन की रात्रि नहीं बल्कि कृष्णमय चेतना में निमग्न होने का पावन अवसर है। मंदिरों में ठाकुरजी का विशेष श्रृंगार, भजन-कीर्तन और रासलीला के आयोजन इसी भक्तिभाव को साकार करते हैं।

**चांदनी में अमृतवर्षा:** सनातन धर्म में चंद्रमा को मन का अधिष्ठाता माना गया है। वैदिक एवं पौराणिक परंपराओं में चंद्रदेव की उपासना, सोम की अवधारणा और शीतलता के प्रतीक के रूप में चंद्रमा का विशेष महत्त्व है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में आकाश में पूर्ण चंद्रमा अपनी उज्ज्वल आभा बिखेरता है। वर्षा ऋतु के पश्चात निर्मल आकाश और स्वच्छ वातावरण इस प्राकृतिक सौंदर्य को और भी मनोहारी बना देते हैं। लोकमान्यता है कि इस रात्रि चंद्रमा की किरणों से अमृत बरसता है। इसी विश्वास के कारण अनेक घरों में खीर बनाकर खुले आकाश के नीचे चंद्रकिरणों में रखने और अगले दिन उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करने की परंपरा प्रचलित है। इस परंपरा में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, पारिवारिक सहभागिता और पवित्र भावना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

**व्रत-पूजन:** शरद पूर्णिमा पर श्रद्धालु अपनी पारिवारिक परंपरा और सामर्थ्य के अनुसार व्रत रखते हैं। प्रातः स्नान के उपरांत देवपूजन, इष्टदेव का स्मरण और दान-पुण्य किया जाता है। संध्याकाल में चंद्रदर्शन के पश्चात चंद्रदेव को अर्घ्य अर्पित करने की परंपरा भी अनेक स्थानों पर प्रचलित है। मंदिरों में विशेष भोग, दीपदान, हरिनाम संकीर्तन और धार्मिक प्रवचन आयोजित किए जाते हैं। कहीं श्रीकृष्ण को श्वेत वस्त्रों और पुष्पों से सजाया जाता है, तो कहीं रात्रि में भजन-मंडलियां भक्तिरस का संचार करती हैं। इन समस्त अनुष्ठानों का मूल उद्देश्य अंतःकरण की शुद्धि और ईश्वर के प्रति श्रद्धा का संवर्धन है। *